सुविचार

मंजिलें मिले ना मिले ये तो मुद्दर की बात है, लेकिन अगर हम कोशिश भी नहीं करें, ये तो बिल्कुल गलत बात है।

RNI : RAJHIN13216/2005

दैनिक
गरीबों का सितारा

।। दशकों पुराना साथ।।

निष्पक्ष कलम — निर्भीक आवाज

"आमजन का अखबार" "जन-जन के विचार"

हर पल अपडेट के लिए Login करें : www.garibonkasitara.com

हमारा ध्येय : निष्पक्ष, निरंतर, निर्भय

वर्ष: 17 | अंक: 224 | पेज: 8 | मूल्य 01 रु. | जयपुर, शनिवार 4 मार्च, 2023 | Email: garibonkasitara@gmail.com

कैंब्रिज में बोले राहुल गांधी- भारत में लोकतंत्र खतरे में

मेरे खिलाफ केस हुए; अफसर कहते थे- फोन पर सोच-समझकर बोलना, बातें रिकॉर्ड हो रहीं

गरीबों का सितारा

लंदन। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने ब्रिटेन की कैंब्रिज यूनिवर्सिटी में स्पीच दी। राहुल ने मंगलवार को भारत में विपक्षी पार्टियों, नेताओं और लोकतांत्रिक संस्थाओं की दिक्कतों का जिक्र किया था। राहुल ने कहा, "मेरे फोन की जासूसी होती है। विपक्ष के खिलाफ केस दर्ज किए जाते हैं। भारत में विपक्षी नेता के तौर पर यह एक ऐसा दबाव है, जो लगातार झेलना पड़ता है।" राहुल की स्पीच का श्क्लिड सैम पित्रोदा ने शेयर किया है। राहुल के इस बयान पर भाजपा ने ऐतराज जताया है। केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा- 'राहुल विदेशी धरती पर भारत को बदनाम कर रहे हैं।

मेरी बातें रिकॉर्ड की जाती थीं

राहुल ने कहा, "बड़े पैमाने पर राजनीतिक नेताओं के फोन में पेगासस है। मेरे फोन में भी पेगासस था। मुझे इंटेलिजेंस अफसरों ने बुलाकर कहा था कि आप फोन पर जो कुछ भी कहें, बेहद सतर्क होकर कहें, क्योंकि हम इसे रिकॉर्ड कर रहे हैं। यह एक ऐसा दबाव है, जो हम महसूस करते हैं।"

भारत में मीडिया और लोकतांत्रिक ढांचे पर हमला

उन्होंने कहा, "विपक्ष के खिलाफ केस दर्ज किए जाते हैं। मेरे खिलाफ कई क्रिमिनल केस दर्ज किए गए हैं, लेकिन ये केस ऐसी चीजों के लिए दर्ज किए गए, जो आपराधिक नहीं थीं। जब देश में मीडिया और लोकतांत्रिक ढांचे पर इस तरह का हमला हो रहा हो तो विपक्ष के तौर पर आपके लिए लोगों से बात करना मुश्किल हो जाता है।" राहुल बोले, "लोकतंत्र के लिए जरूरी ढांचा संसद, स्वतंत्र प्रेस, न्यायपालिका होते हैं। आज यह सब विवश होते जा रहे हैं। इसलिए हम भारतीय लोकतंत्र के मूल ढांचे पर हमले का सामना कर रहे हैं। भारतीय संविधान में भारत को राज्यों का संघ बताया गया है। उस संघ को बातचीत की जरूरत है। यह वह बातचीत है जो खतरे में है। आप देख सकते हैं तस्वीर जो संसद भवन के सामने की है। विपक्ष के नेता कुछ मुद्दों पर बात कर रहे थे और उन्हें जेल में डाल दिया गया। ऐसा 3 या 4 बार हुआ है। जो हिंसक था।"

- अनुराग ठाकुर ने पेगासस मुद्दे पर कहा- 'यह कहीं और नहीं बल्कि राहुल के दिल-दिमाग में हुआ है। उनकी क्या मजबूरी थी जो अपना फोन जमा नहीं करवाया। ऐसा क्या था उनके फोन में। एक के बाद एक हार को वे पचा नहीं पा रहे हैं, जिस तरह से वे विदेश धरती पर, कभी विदेशी दोस्तों के जरिए भारत को बदनाम करते हैं।

आतंकवादी मुझसे मिले थे, लेकिन उन्होंने मुझे कुछ नहीं किया

राहुल ने बताया, "भारत जोड़ो यात्रा के दौरान एक अनजान आदमी मेरे पास आया। उसने कहा कि वह मुझसे बात करना चाहता है। उसने पूछा कि क्या मैं सच में लोगों की समस्याएं सुनने के लिए आया हूं। उसने आसपास के कुछ लोगों की ओर इशारा करते हुए कहा कि वे सभी आतंकवादी हैं।

प्रदेश में तीन दिन 14 जिलों में बारिश की संभावना

जयपुर, जोधपुर, कोटा और उदयपुर भी भीगेंगे; फिर पड़ेगी तेज गर्मी

गरीबों का सितारा

जयपुर। राजस्थान में तेज गर्मी की चेतावनी के बीच थोड़ी राहत की खबर है। आज देर शाम से पश्चिमी राजस्थान के मौसम में बदलाव देखने को मिलेगा। जोधपुर संभाग के जिलों में कहीं-कहीं बादल छाने के साथ बारिश की संभावना है। इतना ही नहीं 4 और 5 मार्च को अजमेर, जयपुर, उदयपुर, कोटा और भरतपुर संभाग के जिलों में भी मौसम में बदलाव देखने को मिलेगा। कुल 14 जिलों में बारिश की संभावना है। मौसम केंद्र जयपुर के निदेशक राधेश्याम शर्मा ने बताया- बंगाल की खाड़ी में बने एंटी साइक्लोनिक सिस्टम और उत्तर भारत में एक्टिव हो रहे वेस्टर्न डिस्टर्बेंस से मध्य भारत के राजस्थान, गुजरात और मध्य प्रदेश के हिस्सों में एक नया वेदर सिस्टम बन रहा है। इस सिस्टम के असर से ही राजस्थान के दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण-पूर्वी हिस्सों में मौसम में बदलाव आएगा। हालांकि इस सिस्टम से ज्यादा बारिश तो नहीं होगी, लेकिन कई जगहों पर हल्की बारिश हो सकती है, जिससे लोगों को गर्मी से थोड़ी राहत मिलेगी।

ऐसा रहेगा तीन का मौसम

मौसम केंद्र जयपुर के मुताबिक आज शाम से जोधपुर संभाग के जैसलमेर, बाड़मेर और जोधपुर जिले में आज बादल छा सकते हैं। वहीं कहीं-कहीं हल्की बारिश या बूंदाबांदी भी हो सकती है। 4 मार्च को जोधपुर, बीकानेर संभाग के अलावा अजमेर, जयपुर, उदयपुर, कोटा संभाग के जिलों में मौसम में बदलाव देखने को मिलेगा। यहां अजमेर, नागौर, पाली, जयपुर, टोंक, सवाई माधोपुर, राजसमंद, उदयपुर, डूंगरपुर, कोटा, बूंदी जिलों में हल्की बारिश हो सकती है।

जयपुर में यूजीसी नेट के पेपर में हुई सामूहिक नकल

मोबाइल के साथ स्टूडेंट्स को एंट्री, कुछ कैंडिडेट ने विरोध किया तो धक्के देकर निकाला

गरीबों का सितारा

जयपुर। राजस्थान में भर्ती परीक्षाओं के पेपर लीक होने के बाद अब यूजीसी नेट की परीक्षा में भी सामूहिक नकल का मामला सामने आया है। जयपुर में एक सेंटर पर स्टूडेंट्स एक साथ बैठकर पेपर को हल करते दिखाई दिए। वहां मौजूद दूसरे स्टूडेंट्स ने इसका वीडियो बना लिया और शेयर कर दिया। आरोप है कि कुछ स्टूडेंट मोबाइल से पेपर हल कर रहे थे। दरअसल, जयपुर के नितिन गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल में शुक्रवार को यूजीसी नेट की पहली पारी में सुबह 9 बजे से भूगोल(जियोग्राफी) का पेपर था। इसके लिए स्टूडेंट्स को 7:30 बजे से एंट्री दी जानी थी। सवा 8 बजे तक स्कूल प्रशासन ने छात्रों को एंट्री नहीं दी। आनन-फानन में स्कूल प्रशासन ने 8:30 बजे स्टूडेंट्स को एंट्री देकर 9 बजे पेपर शुरू कराया। पेपर शुरू होने के लगभग 30 मिनट बाद छात्रों ने नकल का आरोप लगाते हुए स्कूल प्रशासन के खिलाफ विरोध शुरू कर दिया। उन्होंने कहा कि पेपर के दौरान छात्रों को मोबाइल ले जाने दिया गया है। इससे वह मोबाइल के जरिए अपने सवालों का जवाब ढूंढ रहे हैं। वहीं, एग्जाम हॉल में कोई टीचर भी नहीं है। इसकी वजह से स्टूडेंट्स ग्रुप बनाकर नकल कर रहे हैं। ऐसे में पेपर रद्द किया जाना चाहिए। नकल का आरोप लगाते स्टूडेंट ने एक वीडियो भी बनाया। वीडियो सामने आते ही स्कूल मैनेजमेंट ने पेपर को रद्द करने की बात कहकर स्टूडेंट्स को स्कूल से बाहर निकाल दिया। इसके बाद सुबह 11 बजे स्कूल प्रबंधन ने एक बार फिर छात्रों को पहली पारी का पेपर देने के लिए बुलाया। इस दौरान स्टूडेंट्स ने पूछा क्या नए सिरे से पेपर लिया जाएगा। तब स्कूल मैनेजमेंट ने पुराने पेपर को ही फिर से लेने की बात कही। छात्रों ने हंगामा शुरू कर दिया। इस दौरान छात्रों के विरोध को देख स्कूल मैनेजमेंट भी मौके से भाग गया। इसके कुछ देर बाद बजाज नगर थाना पुलिस मौके पर पहुंची। विरोध कर रहे स्टूडेंट्स को बाहर निकाला। एग्जाम देने पहुंची ज्योति ने बताया- नितिन स्कूल में एग्जाम के नाम पर यूजीसी के नियमों की जमकर धज्जियां उड़ाई गईं। एग्जाम शुरू होने के बाद भी स्कूल मैनेजमेंट ने स्टूडेंट्स को एंट्री दी। इस दौरान काफी स्टूडेंट्स के पास मोबाइल भी थे। इससे वह पेपर में आए सवालों को अपने साथियों से पूछकर सॉल्व कर रहे थे। कुछ क्लास रूम में टीचर ही नहीं थे। जहां ग्रुप में बैठ पेपर सॉल्व किया जा रहा था। ऐसे में यूजीसी नेट का पेपर रद्द किया जाना चाहिए। इसके साथ ही स्कूल प्रबंधन और लापरवाह टीचर्स के खिलाफ भी कार्रवाई की जानी चाहिए।

स्कूल स्टाफ ने धमकाया

स्टूडेंट अंकिता ने बताया कि हम जब एग्जाम सेंटर पहुंचे, तब वहां रूम बताने वाला भी कोई टीचर नहीं था। इसके बाद बमुश्किल हम दूसरे स्टूडेंट्स से पूछ अपने रूम तक पहुंचे। जहां जाकर बैठे ही थे। तभी स्कूल स्टाफ ने हमें धमकाना शुरू कर दिया। इसके कुछ देर बाद स्कूल में नकल को लेकर विवाद शुरू हो गया।

चुप रहने की दी धमकी

स्टूडेंट नरेंद्र ने बताया कि एग्जाम सेंटर में बिना चेकिंग स्टूडेंट्स को एंट्री दी गई। इसके बाद जैसे ही हम रूम में पहुंचे, वहां काफी स्टूडेंट्स के पास मोबाइल थे। जब हमने इसका विरोध किया। तो स्कूल स्टाफ हमें चुप रहने की धमकी देने लगा। इसके बाद जब विवाद बढ़ा तो स्कूल स्टाफ हम सब को छोड़ भाग गया।

ममता को घेरने के लिए लेफ्ट-कांग्रेस-बीजेपी साथ

बंगाल पंचायत चुनाव की तैयारी शुरू, BJP प्रदेश अध्यक्ष बोले- ये लोकल गठजोड़

गरीबों का सितारा

कोलकाता। 'अगर फ्रर एक फीसदी भी हमें सपोर्ट करे, तो हम लाल आतंक से लड़ने में कामयाब होंगे'। यह बात ममता बनर्जी ने साल 2003 में कही थी। तब वे पश्चिम बंगाल में विपक्ष में हुआ करती थीं और वामपंथियों से लड़ रही थीं, जिनकी बंगाल में तूती बोलती थी। उस समय ममता NDA का हिस्सा थीं। यह वही वक्त था, जब फ्रर नेता तरुण विजय ने ममता बनर्जी को मंच पर भाषण देने के लिए बुलाया था तो उन्हें बंगाल की दुर्गा कहकर पुकारा था। 2011 में ममता बनर्जी ने CPM के 34 साल का राज खत्म कर दिया था। तब से वे बंगाल की सत्ता में हैं। 20 साल पहले जिस फ्रर से वे लाल आतंक खत्म करने के लिए मदद मांग रही थीं, वही फ्रर और BJP की अब CPM के लोग मदद कर रहे हैं, बंगाल से ममता बनर्जी को हटाने के लिए। पश्चिम बंगाल में अप्रैल-मई में पंचायत चुनाव हो सकते हैं। मामला अभी कोर्ट में है, इसलिए तारीख तय नहीं हो पा रही। कोर्ट के आदेश के बाद ही तय होगा कि चुनाव कब होंगे। TMC से लेकर BJP और CPM तक ने ग्राउंड पर चुनावों की तैयारी शुरू कर दी है। इसकी वजह है कि पंचायत चुनाव अगले साल होने वाले लोकसभा चुनावों में बड़ा असर डालेंगे।

विधायक बोले- SMS पूर्व प्रिंसिपल ने मुझे हेवी डोज दी

बाड़मेर में होली पर धारा 144 का मामला गूंजा, राठौड़ बोले- यह आदेश सरकार पर कलंक

गरीबों का सितारा

जयपुर। विधानसभा में आज मेडिकल से जुड़ी मांगों की बहस के दौरान बीजेपी विधायक अभिनेष महर्षि ने एसएमएस मेडिकल कॉलेज के पूर्व प्रिंसिपल सुधरी भंडारी पर खुद के इलाज में भारी लापरवाही के आरोप लगाए। इस मामले में सीएम का जिक्र आने के बाद सदन में जमकर हंगामा हुआ। अभिनेष महर्षि ने कहा- मुझे कोरोना हो गया था। मैं आरयूएचएस में भर्ती था। कई कहते थे डॉ सुधीर भंडारी अच्छे डॉक्टर हैं। उन भंडारी साहब ने मेरे साथ क्या किया, वह आपबीती सुना रहा हूं। एक दिन अचानक सुबह डॉक्टर भंडारी टीम लेकर मेरे पास आए। मेरे घरवालों को भी बुला लिया। मैं समझ नहीं पा रहा था अचानक क्या हुआ जबकि मैं ठीक था। मैंने उनसे पूछा कि हुआ क्या। डॉ. भंडारी दूर खड़े हो गए। मुझे शांति से रहने को कहा। मुझे चार इजेक्शन लगा दिए। कुछ दवाइयां भी दी गई। मेरी हालत खराब हो गई।

अभिषेक नाम के गंभीर मरीज की रिपोर्ट पर मेरे इंजेक्शन लगाए

आज भी साइड इफेक्ट भुगत रहा हूं

विधायक ने कहा- जब डॉक्टर चले गए तो मैंने नर्सिंगकर्मी से मेरी रिपोर्ट और फाइल मंगवाई। वह देखकर मेरे होश उड़ गए। कोई अभिषेक नाम का मरीज था। उसकी हालत बहुत गंभीर थी। उसकी रिपोर्ट के आधार पर गफलत में मुझे चार-चार इंजेक्शन लगा दिए। उस हेवी डोज के साइड इफेक्ट आज भी भुगत रहा हूं। रिपोर्ट देखकर मैंने डॉ भंडारी को फोन करके बुलाया। कहा- मैं विपक्ष का विधायक हूं, इसलिए शायद मुख्यमंत्री ने मारने के लिए कहा होगा।

सीएम का नाम लेने पर हंगामा

अभिनेष महर्षि की टिप्पणी पर सत्तापक्ष के विधायकों ने कड़ी आपत्ति जताते हुए सीएम के खिलाफ किया कमेंट कार्रवाई से निकालने की मांग की। इस पर पक्ष विपक्ष में जमकर नोकझोंक हुई। उपनेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ ने कहा- विधायक का दर्द वाजिब है। विधायक के परिजनों ने मुझे फोन करके कहा था कि आपके साथी से आखिरी मुलाकात कर लीजिए, मेरे आंसू आ गए थे। एक डॉक्टर इतनी लापरवाही कैसे कर सकता है, वे अपनी आपबीती बता रहे हैं।

पूर्वानुमान>	शनि	रवि	सोम	मंगल
24° अधिकतम>	31°c	29°c	30°c	31°c
न्यूनतम>	15°c	15°c	17°c	17°c

होली पर 'नदबई' में गहलोत सरकार का बड़ा तोहफा : लोगों ने बोला: थैंक यू वेरी मच 'अवाना'

गरीबों का सितारा

भरतपुर/नदबई। रंगो के त्योहार "होली" पर इस बार गहलोत सरकार ने नदबई निर्वाचन क्षेत्र के लोगों के जीवन में खुशियों के इतने रंग भर दिए हैं कि वे न तो

गहलोत सरकार को भूल पाएंगे और ना ही स्थानीय विधायक और देवनारायण बोर्ड के अध्यक्ष जोगिंदर सिंह अवाना को। यूं तो विगत 4 साल में नदबई निर्वाचन क्षेत्र में संपादित हुए रिकॉर्ड तोड़ अनेकों विकास कामों से स्थानीय लोगों के चेहरे खिले -खिले से दिख रहे हैं लेकिन होली से 1 दिन पहले ही 5 मार्च को खेड़ली-नदबाई -कुम्हेर रोड के निर्माण काम के शुरू होने की खबर ने स्थानीय लोगों को इतना रोमांचित कर दिया है कि वे उस पल का बेताबी से इंतजार कर रहे हैं जब गहलोत सरकार के दो मंत्रियों की मौजूदगी में नदबई के गांव बरौली छार में आयोजित एक भव्य समारोह में नारियल फोड़ने की रस्म अदा करने के साथ सड़क का निर्माण गांव शुरू हो जाएगा। यह सड़क दर्जनों गांव में रहने वाले लाखों लोगों के लिए वरदान साबित होगी। विगत 20 साल से इस सड़क के निर्माण की मांग कर रहे लोगों को अब तक सिर्फ हताशा और निराशा ही हाथ लगी लेकिन नदबई के वर्तमान विधायक और देवनारायण बोर्ड के अध्यक्ष जोगिंदर सिंह अवाना ने हताश और निराश लोगो की पीड़ा को दिल से महसूस किया और फिर उन्होंने प्रदेश के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और सार्वजनिक निर्माण विभाग के मंत्री भजन लाल जाटव के समक्ष दमदार और शानदार तरीके से लोगों की इस पीड़ा पीड़ा को रखा जिसे प्रदेश सरकार को आखिरकार स्वीकार करना ही पड़ा जिसके बाद क्षेत्र के लोगों में अवाना को थैंक यू वेरी मच कहने की होड़ मची हुई है।

सितारा न्यूज नेटवर्क पालिटिक्स बिग स्टोरी गरीबों का सितारा सितारा न्यूज नेटवर्क

नदबई ब्लॉक कांग्रेस कमेटी भी समारोह को यादगार बनाने में जुटी

इस सड़क के निर्माण काम के शुरू होने से नदबई इलाके के कांग्रेस जनों में भी जोरदार उसका छाया हुआ है। नदबई ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष हर स्वरूप शर्मा 5 मार्च को आयोजित होने वाले समारोह को यादगार बनाने के लिए पूरी ताकत से जुटे हुए हैं समारोह में भारी भीड़ उमड़ने की बात कही जा रही है क्योंकि कई सालों से लोग सड़क के लिए तरस रहे थे इसलिए सालों की तमन्ना को अब अपनी आंखों से पूरा होता हुआ देखकर लोग काफी रोमांचक दिख रहे हैं। इलाके के कांग्रेसन भी अब पूरे इलाके में घर घर जाकर

लोगों को समारोह में आने के लिए न्योता दे रहे हैं। कांग्रेस जनों का कहना है कि स्थानीय विधायक जोगिंदर सिंह अवाना की मेहनत से ही यह काम सफल हो पाया है अन्यथा अब से पहले चुने गए विधायकों ने सिर्फ क्षेत्र के लोगों के साथ इस सड़क के निर्माण के लिए धोखा ही किया लेकिन अवाना ने क्षेत्र के लोगों की तकलीफों को समझा और अथक प्रयास करके आखिरकार इस सड़क निर्माण की मंजूरी सरकार से ले ही ली।

बरौली छार में होगा समारोह, रंगारंग कार्यक्रम का भी होगा आयोजन

नदबई के बरौली छार में 5 मार्च को सुबह 10:00 बजे खेड़ली-नदबई -कुम्हेर रोड के निर्माण काम का शुभारंभ होगा। इस मौके पर प्रदेश के सार्वजनिक निर्माण विभाग के मंत्री भजन लाल जाटव, स्थानीय विधायक और देवनारायण बोर्ड के अध्यक्ष जोगिंदर सिंह अवाना, कठूमर विधायक बाबूलाल बेरवा, उज्जैन पंचायत समिति के प्रधान हिमांशु अवाना सहित कई गणमान्य लोग मौजूद रहेंगे। विगत कई सालों से लोग इस सड़क के लिए तरस रहे थे इसलिए स्थानीय विधायक, कांग्रेस जन, व्यापारिक जन, और विभिन्न सामाजिक संगठनों की ख्वाहिश थी कि समारोह पूर्वक कार्यक्रम का आयोजन किया जाए इसलिए समारोह को यादगार बनाने के लिए होली के त्यौहार को देखते हुए मौके पर विख्यात कृष्णा गुर्जर पार्टी को भी बुलाया गया है जो रंगारंग प्रस्तुतियां पेश करेंगे इसके अलावा हास्य कवि शंकर शेखर को भी बुलाया गया है। लोक कलाकारों की ओर से शानदार नृत्य और गायन प्रस्तुत किया जाएगा। यह सड़क करीब 39 किलोमीटर की होगी जिसकी लागत करीब 143.69 करोड रुपए आंकी गई है।

पंचांग

दिनांक 04मार्च 2023 शनिवार
विक्रम संवत2079फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि	द्वादशी	11:42:40
पक्ष	शुक्ल	
नक्षत्र	पुष्य	18:40:19
योग	शोभन	19:34:57
करण	बालव	11:42:40
करण	कौलव	24:56:06
चन्द्र राशि	कर्क	
सूर्य राशि	कुम्भ	
दिशा शूल	पूर्व	
सूर्योदय(जयपुर)	06:49:33	
सूर्यास्त	18:28:00	
चंद्रोदय	15:42:59	
चंद्रास्त	29:42:37	
राहू काल	09:44-11:11	
अभिजित	12:16-13:02	
शुभ चोघडिया		
शुभ	08:17-09:44	शुभ
चर	12:39-14:06	शुभ
लाभ	14:06-15:33	शुभ
अमृत	15:33-17:01	शुभ

विशेष जानकारी:-
होलाष्टक प्रारम्भ
प्रदोष व्रत:-आज

ज्योतिषाचार्य
भानुप्रकाश शास्त्री

ऑन ड्यूटी यूटीबी नर्सिंग ऑफिसर को सीपीआर देकर बचाई जान

चिरंजीवी योजना के तहत पीबीएम में चल रहा मरीज का नि:शुल्क उपचार

गरीबों का सितारा

उमेश कुमार मोदी/बीकानेर। श्वसन रोग विभाग पीबीएम में यूटीबी नर्सिंग ऑफिसर पद पर कार्यरत धर्मेंद्र मीना की गुरूवार शाम अचानक तबियत बिगड़ गयी, उसे सीने में दर्द हुआ और बेहोश हो गया, वहां उपस्थित साथी कार्मिकों तथा रेजिडेण्ट डॉक्टर्स ने तुरंत मामले की गंभीरता देखते हुए सीपीआर देने की प्रक्रिया शुरू की साथ ही प्राचार्य डॉ. गुंजन सोनी सहित वरिष्ठ डॉक्टर्स को सूचित किया, इस पर डॉ. सोनी ने हृदय रोग विभाग से डॉ. पिण्टू नाहटा को आरआईसीयू मे टीम सहीत बुलवाया। दोनों विभागों की टीम ने करीब एक घण्टे तक धर्मेन्द्र को सीपीआर दिया तब जाकर उसे पुनः श्वास आया। उल्लेखनीय है कि मरीज धर्मेन्द्र के चिंरजीवी योजना में पंजीकरण होने के कारण तुरंत निःशुल्क उपचार शुरू हो गया, अब मरीज खतरे से बाहर है। मरीज के परिजनों ने प्राचार्य सोनी के कुशल चिकित्सा प्रबंधन एवं मुख्यमंत्री को

ऐतिहासिक चिरंजीवी योजना लागू करने पर आभार प्रकट किया है। प्राचार्य एवं नियंत्रक गुंजन सोनी ने सभी नागरिकों से आग्रह किया है कि राजस्थान सरकार द्वारा संचालित चिंरजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना में अधिक से अधिक व्यक्ति अपना पंजीकरण करवाएं क्योंकि बीमारी कभी किसी को सूचना देकर नहीं आती ओर आपात स्थिति में मरीजों का उपचार तुरंत शुरू हो जाता है।

इन डॉक्टर्स की टीम ने दिखाई सक्रियता

प्राचार्य डॉ. गुंजन सोनी के मार्गदर्शन में श्वसन रोग विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. मानक गुजरानी, डॉ. राजेन्द्र शौकत, डॉ. सौगत, डॉक्टर, डॉ.जेके खत्री, श्वसन रोग विभाग के रेजिडेण्ट डॉक्टर रामनिवास, डॉ. हरिश, डॉ. गौरव, डॉ. दीलिप हृदय रोग विभाग से डॉक्टर पिण्टू नाहटा, डॉ. सुनील बुड़ानिया, डॉ..प्रियांशु, डॉ. वरूण, डॉ. युधिष्ठीर आदि ने मिलकर मरीज को उचित समय पर उपचार प्रदान कर गंभीर स्थिति से बाहर निकाला।

इन पैरामेडिकल स्टाफ का भी रहा विशेष सहयोग

नर्सिंग स्टाफ शक्तिसिंह, पुष्पेन्द्र सिंह, निर्मला चौधरी एवं सहायक कर्मचारी गणेश चौहान आदि का उपचार के दौरान विशेष सहयोग रहा।

माँ भारती फाउंडेशन जोबनेर में वार्षिक उत्सव समारोह का आयोजन बड़े ही हर्षोल्लास के साथ किया गया

कक्षा 11वी के विद्यार्थियों के द्वारा कक्षा 12 के विद्यार्थियों को विधि पूर्वक विदाई दी

गरीबों का सितारा

जयपुर। जोबनेर में माँ भारती विद्या मंदिर सीनियर सेकेंडरी स्कूल के द्वारा संचालित माँ भारती फाउंडेशन में वार्षिकोत्सव एवं विदाई समारोह का आयोजन किया गया। जिस के मुख्य अतिथि संस्था संरक्षक लक्ष्मीनारायण जांगू रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्था निदेशक यशपाल चौधरी ने की। कार्यक्रम की शुरूआत विधिवत मां सरस्वती की पूजा अर्चना के साथ की गई। मां सरस्वती की पूजा अर्चना में समस्त विद्यालय स्टाफ ने मां सारस्वती की आराधना की। माँ सारस्वती की आराधना के पश्चात विद्यालय के बालक बालिकाओं ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी तत्पश्चात कक्षा 11 के विद्यार्थियों के द्वारा कक्षा 12 के विद्यार्थियों को विधि पूर्वक विदाई दी गई। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित सभी अध्यापक अध्यापिका ने छात्र छात्राओं को उच्च अध्ययन के लिए कड़ी मेहनत करने और सफलता के लिए कड़ी मेहनत के बारे में बताया। कार्यक्रम के समापन पर सपना चौधरी ने उपस्थित छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए आगुंतक अभिभावकों का भी आभार प्रकट किया साथ ही उत्कृष्ट परिणाम देने वाले विद्यार्थियों के लिए पारितोषिक की घोषणा की गई। विद्यालय के इस कार्यक्रम में प्रधानाचार्य कैलाश चंद मीणा, कमलेश कुमावत, योगराज सिंह नोगिया, रविंद्र सिंह नाथावत, आदित्य शर्मा, राम गोपाल कुमावत, विष्णु शर्मा , भरत कुमावत, सुनील कुमार शास्त्री, अशोक कुमार कुमावत, जितेंद्र कुमार कुमावत ,राहुल कुमावत ,पंकज फौजी, अशोक कुमार कुमावत, सुरेश कुमार पुनिया ,जगदीश बिजारणिया, गोपीचंद मीणा, नन्नू राम प्रजापत, करिश्मा कुमावत, संजना चौधरी, पूजा गहलोत ,पूजा यादव मौजूद रहे।

प्रिंस रेजिडेंशियल सीनियर सेकेंडरी स्कूल गोविंदपुरा में सम्मान समारोह आयोजित

जयपुर। कालवाड रोड गोविंदपुरा में स्थित प्रिंस स्कूल हमेशा से ही प्रतिभाओं का सम्मान करता आया है। प्रिंस परिवार ने देश को ऐसी प्रतिभाएं दी है जो विभिन्न क्षेत्रों में बड़े-बड़े पदों पर काम कर देश का गौरव बढ़ा रहे हैं। ऐसा ही एक सम्मान का अवसर ओर प्राप्त हुआ। संस्था के पूर्व छात्र रहे कमल कुमावत का भारतीय सेना में लेखा परीक्षक के पद पर चयन हुआ है। छात्र 8 साल तक संस्था का नियमित अध्ययनरत विद्यार्थी रहा है। यह पल पूरे संस्था परिवार के लिए गौरव का पल था। कमल कुमावत ने संस्था के सभी विद्यार्थियों के सामने अपनी सफलता के अनुभव साझा किए तथा बताया कि किस प्रकार विपरीत परिस्थितियों में भी लगातार संघर्ष कर सफलता प्राप्त की जा सकती है। इस अवसर पर संस्था निदेशक दीपाराम जाट ने कमल कुमावत का माला व साफा पहनाकर स्वागत किया तथा उज्जवल भविष्य की कामना की।

संस्था निदेशक ने कमल कुमावत की कड़ी मेहनत व लगन आत्मविश्वास की प्रशंसा की तथा बताया की जो तपेगा वह जपेगा। कड़ी मेहनत करने व दृढ़ आत्मविश्वास से जीवन में कठिन से कठिन परिस्थितियों से लड़कर ही सफलता प्राप्त की जा सकती है छात्र के पिताजी हुक्मीचंद कुमावत ने इस सफलता के लिए विद्यालय परिवार का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य झाबर सिंह बिजारणिया, प्रधानाचार्या रजनी मल्होत्रा, उप-प्रधानाचार्या अर्पणा सिंह, समस्त अध्यापकगण एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। विद्यालय परिवार विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य के लिए हमेशा प्रयासरत है।

जाटो की 'हुंकार' से पहले ही 'गहलोत सरकार' जाटों को लेकर हुई नरम

वीर तेजाजी बोर्ड गठन की मंजूरी प्रदान कर जाट महासभा को विश्वास में लेने की कोशिश

गरीबों का सितारा

जयपुर। जाट महाकुंभ के आयोजन से पहले ही प्रदेश की गहलोत सरकार जाटों को लेकर नरम होती हुई दिख रही है यही वजह है कि प्रदेश सरकार ने राजस्थान जाट महासभा की प्रमुख मांग वीर तेजाजी बोर्ड गठन की मंजूरी प्रदान कर दी है। कहने का तात्पर्य जाट महासभा की एक प्रमुख मांग को स्वीकार कर प्रदेश के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने जाट महासभा को विश्वास में लेने का प्रयास शुरू कर दिया है। राजस्थान सरकार की ओर से वीर तेजाजी बोर्ड गठन की मंजूरी प्रदान करने के आदेश को लेकर शुक्रवार को दिन भर विभिन्न सामाजिक संगठनों, व्यापारिक संगठनों, राजस्थान जाट महासभा और

जाट बिरादरी के लोगों में चर्चा होती रही। शासन सचिवालय के गलियारों और राजनीतिक गलियारों में भी वीर तेजाजी बोर्ड गठन की चर्चाएं शुक्रवार को दिन भर सुनने को मिली। लोग यह भी चर्चा कर रहे थे कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत राजस्थान जाट महासभा का दिल जीत ही लेंगे फिलहाल भले ही राजस्थान सरकार ने जाट महासभा की एक मांग को पूरी कर दिया हो लेकिन जाट महासभा की ओर से और भी बहुत सी मांगे हैं जिनको लेकर जाट महाकुंभ में सामूहिक चर्चा होगी और फिर इन सभी मांगों को लेकर सरकार से पूरी करवाने के लिए आवश्यक रणनीति भी जाट महाकुंभ में तैयार की जाएगी इसलिए राजस्थान जाट महासभा आगामी 5 मार्च को जयपुर के विद्याधर नगर स्टेडियम में होने वाली अपनी सभा को लेकर पूरी तरह से मुस्तैद और तैयार दिख रही है। सभा स्थल पर विशाल पांडाल बनाया गया है तथा सभा स्थल पर चिकित्सा, शौचालय इत्यादि की भी व्यवस्था की गई है।

जयपुर वलो जाट महाकुंभ 5 मार्च 2023

कांग्रेसी भाजपा सहित सभी राजनीतिक दलों की जाट महाकुंभ पर है पैनी निगाहें

5 मार्च को विद्याधर नगर स्टेडियम में राजस्थान जाट महासभा की ओर से आयोजित होने वाले जाट महाकुंभ को लेकर सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी के अलावा प्रमुख विपक्षी दल भारतीय जनता पार्टी भी काफी अलर्ट दिख रही है' हालांकि जाट महासभा की ओर से सभी राजनीतिक दलों के जाट बिरादरी के विधायकों, पूर्व विधायकों, सांसदों, पूर्व सांसदों, जिला परिषद और पंचायत समिति के जाट बिरादरी के सदस्यों, नगर निकायों के जाट बिरादरी के सदस्यों इत्यादि को आमंत्रित किया गया है अब कौन कौन जाट बिरादरी का नेता इस महाकुंभ में शामिल होगा इस बात का तो पता 5 मार्च को ही चल पाएगा लेकिन इतना जरूर है इस महाकुंभ में लाखों लोगों के शामिल होने की बातें कहीं जा रही है कितनी भीड़ महाकुंभ में झुकती है यह भी कभी देखने वाली बात होगी भाजपा और कांग्रेस दोनों ही दलों के नेता और रणनीति का इस महाकुंभ की पल-पल की गतिविधियों पर पैनी निगाहें टिकाए भी है क्योंकि प्रदेश की राजनीति में जाट राजनीति का काफी वर्चस्व शुरू से ही रहा है इसलिए जाट मतदाताओं को लेकर प्रदेश के सभी राजनीतिक दल हमेशा गंभीर और चौकस रहे हैं क्योंकि चालू साल के अंत में ही विधानसभा चुनाव होने वाले हैं ऐसे में 5 मार्च को जयपुर में आयोजित जाट महाकुंभ को लेकर भाजपा और कांग्रेस दोनों ही दलों के नेता काफी गंभीर हैं।

जाट महासभा का कहना रैली से जयपुर वासियों को नहीं होगी परेशानी

राजस्थान जाट महासभा के मीडिया प्रभारी शीशराम कटेवा ने बताया है कि 5 मार्च को विद्याधर नगर स्टेडियम में आयोजित जाट महाकुंभ से शहर वासियों को किसी भी तरह की कोई परेशानी नहीं होगी क्योंकि जाट महासभा ने जिला प्रशासन पर पुलिस के आला अधिकारियों से अहम मीटिंग कर रैली में आने वाले वाहनों के पार्किंग और आवागमन के रास्तों का जो रूट निर्धारित किया है उससे शहर में यातायात व्यवस्था में किसी भी तरह का कोई व्यवधान खड़ा नहीं होगा इसके लिए जयपुर के सभी चारों तरफ के रास्तों से रैली में आने वाले वाहनों के लिए अलग-अलग व्यवस्थाएं की गई है जिससे शहर वासियों को जाम की समस्या से नहीं जूझना पड़ेगा।

ऑल इंडिया रेलवे मैन्स फेडरेशन की कार्यकारणी समिति की बैठक 2 ओर 3 मार्च को जोधपुर में हुई

गरीबों का सितारा

उमेश कुमार मोदी/बीकानेर। मीटिंग मे राष्ट्रीय कार्यकरणी में अहम मुद्दा न्यू पैंशन का विरोध रहा। कॉम शिव गोपाल मिश्रा महामंत्री आल इंडिया रेलवे मैन्स फेडरेशन ने कहा हमने संकल्प ले लिए है ओल्ड पैंशन हर हाल में बहाल कर-के रहेगे। प्रधानमंत्री जी का नारा सबका साथ सबका विकास सबका विश्वास केंद्र सरकार इस पर अमल करे और इस नारे को पूरा करते हुए सभी केंद्र और राज्य कर्मचारियों की ओल्ड पैंशन को बहाल करे। कॉम शिव गोपाल मिश्रा ने हुंकार बरते हुए कहा कि केंद्र सरकार जल्द

पुरानी पैंशन लागू करे । अगर समय पर ये मांग नही माननी तो आगामी 21 जुलाई को देश के सभी केंद्र और राज्य कर्मचारी

संसद का घेराव करेंगे । कॉम वेणुगोपाल महामंत्री सेंट्रेल रेल्वे ने अपने उध्बोधन मे कहा आज देश मे सबसे ज्यादा हुआ

रेल कर्मचारी है जो न्यू पैंशन ले रहे है देश मे सात लाख युवा रेल कर्मचारी वर्ष 2004 के बाद लगा वो अपने भविष्य के लिए न्यू पैंशन का विरोध कर अपना समय समय पर विरोध दर्ज करवा रहा है। ओल्ड पैंशन बहाली पर केंद्र सरकार समय रहते निर्णय नही लेती है तो ऑल इंडिया रेलवे मैन्स फेडरेशन राष्ट्रीय कार्यकरणी एवं कॉम शिव गोपाल मिश्रा महामंत्री के आह्वान पर सबसे पहले रेल के कर्मचारी रेल का चक्का जाम करेंगे। कॉम मुकेश माथुर महामंत्री नॉर्थ वेस्टर्न रेलवे एम्प्लॉइज यूनियन जयपुर ने कहा केंद्र सरकार ने न्यू पैंशन स्कीम पर अपना रुख स्पष्ट नही किया तो आने वाले चुनाव पर सभी कर्मचारी इस पर अपना विरोध दर्ज करेंगे। हम किसी राजनीति से सम्बंध नही रखते है। न ही किसी पार्टी का समर्थन करते है सरकार कोई आये जाये हमे इस से कोई मतलब नही जो भी सरकार श्रमिक एवं कर्मचारी विरोधी नीतियां लागू करेगी तो ऑल इंडिया रेलवे मैन्स फेडरेशन एवं नॉर्थ वेस्टर्न रेलवे एम्प्लॉइज यूनियन उसका विरोध करेंगी। ऑल इंडिया रेलवे मैन्स फेडरेशन के आह्वान पर पूरे देश में 10 फरवरी से 20 फरवरी तक चले ओल्ड पैंशन बहाली के लिए हस्ताक्षर अभियान पर नॉर्थ वेस्टर्न रेलवे एम्प्लॉइज यूनियन से तीन लाख हस्ताक्षर किया जिसे राष्ट्रपति मोहदय को ये भेजा गया। इस मीटिंग मे राष्ट्रीय कार्यकारिणी मेंबर एवं अजमेर, बीकानेर, जयपुर ,जोधपुर के पाधिकारी एवं सदस्य के साथ सैकड़ो महिला मौजूद रही।

गरीबों का सितारा में प्रकाशित खबर, लेख व विचार लेखकों एवं संवाददाताओं के अपने हैं इसमें संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है। सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र जयपुर होगा।

हुरडा ब्लॉक कांग्रेस के हाथ से हाथ जोड़ो अभियान की खारी का लाम्बा में शुरूआत हुई!

गुलाबपुरा, रामकिशन वैष्णव। ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी एवं राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के निदेर्शानुसार हाथ से हाथ जोड़ो अभियान की शुरूआत ब्लॉक हुरडा में ग्राम पंचायत खारी का लांबा में पूर्व विधायक हगामी लाल मेवाड़ा, मनीष मेवाड़ा, हाथ से हाथ जोड़ो अभियान ब्लॉक प्रभारी ज्ञान मल खटीक, प्रधान हुरडा कृष्ण सिंह राठौड़ गुलाबपुरा पालिका अध्यक्ष सुमित काल्या ,ब्लॉक अध्यक्ष हस्तीमल चौधरी गागेडा ,नगर अध्यक्ष गुलाबपुरा मधुसूदन पारीक , पूर्व पालिकाध्यक्ष चेतन पेशवानी, मण्डल अध्यक्ष शम्भू गुर्जर, गजमल गुर्जर, धनराज मेघवंशी, रोशन मेवाड़ा, पूर्व ब्लाक अध्यक्ष केदार लाल बैरवा, के नेतृत्व में बावड़ी के बालाजी खारी का लांबा से हुई। कांग्रेस के पदाधिकारी द्वारा ग्राम के मुख्य मार्गो से ग्राम में यात्रा निकाली गई। विधायक मेवाड़ा ने राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा जन कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देते हुए बताया कि आमजन के साथ केवल कांग्रेस सरकार ही भला कर रही है हर जाति वर्ग के लोगों को समान रूप से मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास केवल कांग्रेस सरकार द्वारा किया गया है । प्रधान राठौड़ ने कांग्रेस संगठन के सभी पदाधिकारियों का धन्यवाद व आभार प्रकट करते हुए बताया कि हम सभी को एकजुट होकर कांग्रेस संगठन को और अत्यधिक मजबूत करना चाहिए । राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही जन कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी धरातल स्तर पर आम

जनों को पहुंचा कर उन्हें लाभान्वित करने का संकल्प दिलाया ।विधायक प्रत्याशी मनीष मेवाड़ा पालिका अध्यक्ष सुमित कालिया ब्लॉक अध्यक्ष हस्तीमल चौधरी शंभू लाल गुर्जर एडवोकेट अशोक जैन ने कार्यक्रम को संबोधित किया। इस दौरान पूर्व उप जिला प्रमुख गजमल जाट, पूर्व सरपंच अमर सिंह जैन, रामकरण माली, कुलदीप परिहार प्रमोद जाट ,काई अध्यक्ष हंसराज चौहान, कैलाश चौधरी टोकरवाड सरपंच, नेमीचंद बलाई उखलिया सत्यनारायण मेघवंशी बडला, पूर्व नगर अध्यक्ष गुलाबपुरा लक्ष्मीलाल धमानी, पंचायत समिति सदस्य भेरूलाल खटीक, जीएसएस अध्यक्ष नोरत पारीक , बसंतीलाल पारीक, अशोक जैन ,सांवर लाल माली, सांवर लाल रेगर, घनश्याम माली ,छोटू कलाल ,शंकर लोहार ,मदन मेवाड़ा, बक्शा राम देवासी, आजाद लोहार , पुष्कर दयाल मेवाड़ा ,मंगला रेगर,शंकर नायक, फखरुद्दीन नीलगर, बलवीर मेवाड़ा, लादू लाल रेगर, शहाबुद्दीन खां, रामराज भांबी , कुलदीप जाट ,अंकित चौधरी, मनखुश मेवाडा,दिलखुश मेवाडा इत्यादि मोजुद थे।

सितारा न्यूज ब्रीफ

स. ध. कॉलेज के विज्ञान संकाय की प्रायोगिक परीक्षायें 9 मार्च से प्रारम्भ

ब्यावर (अनिल सिखवाल)। महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर द्वारा विज्ञान संकाय के स्नातक स्तर की भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, वनस्पति शास्त्र तथा प्राणी शास्त्र विषयों की स. ध.

राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर केन्द्र पर आयोजित की जाने वाली प्रायोगिक परीक्षा-2023 इसी माह की दिनांक 09-03-2023 से प्रारम्भ होकर 22-03-2023 तक की अवधि में आयोजित होना निश्चित हुआ है ' प्राचार्य डॉ. विरेन्द्र सिंह भाटी ने बताया कि इस बाबत इस महाविद्यालय केन्द्र पर परीक्षा आयोजित करने की समुचित व्यवस्थायें की जा रही हैं क प्रायोगिक परीक्षा समन्वयक डॉ. शशि गुप्ता ने बताया कि इस केन्द्र से प्रायोगिक परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले सभी परीक्षार्थी सभी सम्बन्धित विभागों से सम्पर्क में रहकर नियत तिथि एवं समय पर परीक्षा में शामिल होना सुनिश्चित करें । इस केन्द्र से प्रविष्ट होने वाले सभी परीक्षार्थी उनके परीक्षा में शामिल होने के सम्बन्ध में सभी विभागों के सूचना-पट्ट पर परीक्षार्थियों के सूचनार्थ चस्पा की गई सूचियों से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं सभी परीक्षार्थियों को यह भी सूचित किया जाता हैं कि वे परीक्षा प्रारम्भ होने से आधा घण्टा पूर्व सम्बन्धित विभाग में अपनी उपस्थिति आवश्यक रूप से सुनिश्चित करें ।

धंना भगत दा प्रकाश पर्व आगामी 05 मार्च और होला महल्ला 08 मार्च का आयोजन

गरीबो का सितारा

ब्यावर (अनिल सिखवाल)। रविवार को गुरुद्वारा साहिब धना भगत धुआँकला जिला टोंक में जन्मदिवस मनाया जा रहा है इस प्रोग्राम मे कई रागी जत्थे ,कथा वाचक ,कविसर पहुँच रहे है । बाबा लख्खा सिंह बाबा बलविंदर सिंह के तरफ से बेनती हैं की सारी संगत को शिरकत करनी है। युवा सेवादार ज्यादा से ज्यादा संख्या मे शिरकत करेंगे।इसी क्रम मे 08 मार्च को गुरु गोविंद सिंह द्वारा चलाए गए होला महल्ला महोत्सव बुधवार को गुरुद्वारा नानक पुरा साहेब जिला भीलवाड़ा में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा, जिसमें अनेक रागी जत्थे द्वारा शब्द कीर्तन गायन किया जाएगा 08 मार्च सुबह गुलाबपुरा,बिजयनगर व आस पास से संगत प्रोग्राम में शिरकत करेगी। यह जानकारी ट्रस्ट गुरु सिंह सभा बिजयनगर के प्रधान हरगोविंद सिंह टुटेजा ने दी

सामाजिक संगठन ने किया गरीब कन्याओं का कन्यादान

गरीबो का सितारा

वी.पी.मीणा बहरोड़। क्षेत्र के बर्डोद में शुक्रवार को गोपाल सेवा संस्थान द्वारा तीन कन्या का कन्यादान किया गया ।जिसमें दोनों कन्याओं को अलग-अलग इक्यावन सौ रुपए के चेक दिए गए। व रतिराम चौहान ने भी व्यक्तिगत 6 हजार दो सौ रुपए के चेक दिए। अन्य अतिथियों द्वारा गहने, कपड़े, बर्तन एवं विभिन्न प्रकार की ग्रहस्थ जीवन उपयोगी वस्तुएं कन्याओं को उपहार स्वरूप प्रदान की गई। इनरव्हील क्लब संरक्षक एवं संस्थापक अनुपमा शर्मा ने बताया कि 293 कन्यादान अभी तक किए जा चुके है। इस दौरान पूर्व अध्यक्ष डॉ अर्चना श्रृंगी, गुड्डी अग्रवाल, प्रियांशी, राजेंद्र सैनी, दीपचंद सैनी, शिवचरण सोनी, दिनेश शर्मा एवं ग्रामवासी उपस्थित रहे।

समाज के सुदृढ़ निर्माण हेतु राग-द्वेष को भूल कर सभी जाट बंधुओं को आह्वान : नटवाड़िया

गरीबों का सितारा

जयपुर। 5 मार्च को आयोजित होने वाले जाट महाकुंभ समारोह में सभी जाट बंधुओं से आग्रह है कि वे राजनीति, सामाजिक, आपसी

खींचतान व पारिवारिक राग द्वेष को भूलकर समाज को सशक्त बनाने हेतु एकजुटता व समरसता लाने के लिए गवर्निंग कौशल को राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर व्यवस्थित करने, समाज में फैली हुई कुरीतियों मृत्यु भोज, बाल विवाह, दहेज प्रथा को दूर करने व शिक्षाविदों, होनहार छात्र-छात्राओं, व्यक्तित्व का समय-समय पर उत्साहवर्धन करने हेतु भाजपा राष्ट्रीय शाह शक्ति संगठन के प्रदेशाध्यक्ष रमेंद्र कुमार नटवाड़िया ने समाज के सभी बंधुओं से इस महाकुंभ में आने का आह्वान किया है।

राजावास में निकाली कांग्रेस की हाथ से हाथ जोडों यात्रा

यात्रा के दौरान उप जिलाप्रमुख ने ग्रामवासियों से संवाद कर सुनी समस्याएं

जयपुर। आमेर तहसील के ग्राम राजावास मुख्य गांव में उप जिलाप्रमुख जयपुर मोहन डागर के नेतृत्व में हाथ से हाथ जोडों यात्रा निकाली गई। इस यात्रा के दौरान उप जिलाप्रमुख मोहन डागर ने राजस्थान सरकार की ओर संचालित फ्लैगशिप योजनाओं के बारे में ग्रामीणों को बताया। जिसमे चिरंजीवी योजना, युवा संबल, रांजीव गांधी स्कालरशिप योजना, सारथी योजना, कृषि मित्र, विधा संबल, ई सखी योजना, इंदिरा गांधी मातृत्व पोषण योजना सहित सरकार की महत्वपूर्ण योजनाओं के बारे में जानकारी दी। इसके साथ ही डागर ने ग्रामीणों से जन संवाद कर उनकी समस्याओं को सुना यात्रा में उप जिलाप्रमुख जयपुर मोहन डागर , सरपंच प्रतिनिधि रामसिंह मीणा, शैतान मीणा, मनिष गुलिया, छीतरमल देवन्दा, बाबुलाल देवन्दा, सुरज यादव, रामचंद्र जाँगिड, दिनेश देवन्दा, लालाराम सुण्डा, सुरेश महाराज, रविन्द्र सैन, राजु देवन्दा, दुर्गेश कुम्हार ,आदित्य वर्मा, मोहित वर्मा, अनिल मीणा, अमर चौधरी सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद थे।

ईरांस में उपखण्ड अधिकारी ने की जनसुनवाई हुई

रायला। क्षेत्र के ईरांस में शुक्रवार को जिला कलेक्टर के आदेशानुसार क्षेत्र की जनसमस्याओं के प्रति निस्तारण के साथ ही राजस्थान की फलगेशिप योजनाओं की जानकारी आम आदमी तक पहुँचाने के लिये उपखंड क्षेत्र की ग्राम पंचायत ईरांस में जनसुनवाई की गई । जहाँ ग्राम की बिजली , पानी , सड़क सहित विद्यालय ,नरेगा , सरकारी योजनाओं के फायदा नही मिलने की समस्याओं भारत निर्माण राजीव गांधी सेवा केंद्र ईरांस में सुनीसुनी थी । वही आसीन्द एसडीएम व तहसीलदार ने जनसुनवाई के बाद ईरांस पटवार मंडल के दो जगह मोके पर निरक्षण किया , वही रामपुरिया श्मशान भूमि आराजी नम्बर 25 रकबा 2.70 भूमि पर लम्बे समय अतिक्रमण के बारे मौका देखा । ईरांस में उपखंड अधिकारी सिटी वर्मा , तहसीलदार भँवर लाल सेन नायब तहसीलदार शांतिलाल शर्मा , सरपंच जुवारा भील , ईरांस पीओ गोपालस्वरूप वर्मा ,ग्राम विकास अधिकारी नेमीचंद शर्मा , पटवारी अमर दीप कालियास डॉक्टर सत्यनारायण मीणा सहित अन्य अधिकारी व ग्रामीण मौजूद रहे थे ।

अलवर कलेक्टर के निर्देशन मे रैणी एसडीएम ने शान्ति समिति व सीएलजी सदस्यो की मिटिंग बुलाई

होली के त्योहार पर शान्ति व्यवस्था और सौहार्दपूर्ण व भाईचारा कायम बनाए रखने की अपील की

रैणी(अलवर)महेश चन्द मीना। अलवर जिला कलेक्टर द्वारा 01 मार्च 2023 में प्रदत्त निदेर्शों की पालना में आगामी दिवसों में आने वाले त्योहार पर्व उत्सव शोभायात्रा रैली इत्यादि तथा कानून व्यवस्था को दृष्टिगत रखते हुए सदभाव व सांप्रदायिक सौहार्द कायम रखने हेतु 03 मार्च 2023 को उपखंड मजिस्ट्रेट रैणी की अध्यक्षता में समस्त ब्लॉक स्तरीय अधिकारी , थानाधिकारी , शांति समिति एवं सीएलजी सदस्य तथा क्षेत्र के गणमान्य व्यक्तियों व आमजन के साथ बैठक आयोजित की गई जिसमें रैणी एसडीएम द्वारा कानून व्यवस्था की पालना करवाने एवं किसी भी संवेदनशील/अप्रिय स्थिति की सूचना सर्बधित अधिकारीगण एवं थानाधिकारी रैणी राजगढ़ को सूचित करने हेतु सभी को निर्देशित किया। इस दौरान मिटिंग मे रैणी क्षेत्र के सभी सरपंच/वीडीओ तथा सुरक्षा सखी व रैणी का समस्त प्रशासन मौजूद रहा। रैणी एसडीएम ने सभी से होली के त्योहार को भाईचारे की भावना से शान्तिपूर्ण मनाना है और गुलाल का तिलक लगाकर स्नेहपूर्ण व्यवहार करने की अपील की है। रैणी एसएचओ ने भी कानून व्यवस्था बनाये रखने की अपील करते हुए सोशल मिडिया की भी जानकारी दी गई और मोबाइल पर ठगी से बचने की भी अपील की गई तथा सभी को भाईचारे से रहते हुए सौहार्दपूर्ण तरीके से होली धूलण्डी का त्योहार मनाने की आमजन से अपील करते हुए पुलिस को आमजन का सहयोग मिलने की भी अपील की।

रायला थाना परिसर में आगामी त्योहारों को लेकर सीएलजी की बैठक संपन्न हुई

रायला। रायला थाना परिसर में आज उपखंड अधिकारी निरमा विश्नोई की अध्यक्षता मे त्योहारों के मध्य नजर शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए सीएलजी की मीटिंग रखी गई। इस अवसर पर पुलिस उप अधीक्षक लोकेश कुमार मीणा ने कहां है कि शांति और सौहार्द पूरी तरीके से होली का पर्व मनाएं तथा किसी भी प्रकार का उपद्रव ना हो इसका सभी को ध्यान रखना अति आवश्यक है। कस्बे वह रायला थाना क्षेत्र में स्थित विभिन्न गांव प्रमुख जनप्रतिनिधियों एवं शांति समिति के सदस्यों को बुलाकर शांति व्यवस्था बनाए रखने की अपील की गई। त्योहारों के अवसर पर आम जनता को किसी भी प्रकार की समस्या उत्पन्न ना हो इस बाबत कड़ी निगरानी रखने की बात कही गई। साथ ही उपद्रव फैलाने वाले लोगों की सूचना पुलिस को देने की अपील की गई। इस अवसर पर लोगों ने पुलिस प्रशासन से आग्रह किया कि कस्बे में चोरी और लूट की घटनाओं की रोकथाम के लिए ग्राम पंचायत के माध्यम से विभिन्न चौराहों पर सीसीटीवी कैमरे लगवाए जाने की मांग की गई। यह मांग पिछले 3 साल से लगातार चली आ रही है लेकिन न तो पंचायत ध्यान दे रही है नहीं यहां के समाजसेवी सहयोग के लिए आगे आ रहे हैं जिससे सीसीटीवी कैमरे लगाए जाने के बाद अधर में लटकी रह जाती है। हालांकि ईरास चौराहे पर बंटी दरगड़ नामक व्यक्ति ने सुरक्षा की दृष्टि से थाना अधिकारी सुनील चौधरी के कहने पर सीसीटीवी कैमरा लगा दिया है लेकिन इसी तरह से यदि समाजसेवी लोग आगे आए तो काफी हद तक अपराधों पर अंकुश लगाया जा सकता है। लेकिन यहां के जनप्रतिनिधियों की घोषणा के बावजूद विभिन्न चौराहों पर सीसीटीवी कैमरे लगाए जाने के बाद को लगातार नजरअंदाज करते आ रहे हैं जिससे पुलिस सहित आमजन में स्थानीय प्रशासन के प्रति रोश भी है। आबादी क्षेत्रों में तथा व्यस्त मार्गों पर दुर्घटनाओं का खतरा हर समय बना रहता है ऐसे में खास खास पॉइंट पर स्पीड ब्रेकर बनाए जाने की मांग भी रखी गई। चौराहे पर भीड़ बहुत ज्यादा रहती है तथा चौराहे पर ही वाहन चालक एवं ठेले वाले आकर मार्ग अवरुद्ध करते रहते हैं जिससे आमजन को परेशानी का सामना करना पड़ता है तथा जेबे काटने की संभावना भी रहती है। कई बार यहां के आसपास के अपराधी लोग एटीएम बदलकर लोगों के पैसे भी पार कर चुके हैं। ऐसे में एक पुलिस चौकी रायला चौराहे पर स्थापित की जाए। उपखंड अधिकारी से सीएलजी के सदस्यों ने आग्रह किया कि आमजन की समस्या का समाधान कराया जाए जिससे अपराध और अपराधियों पर नियंत्रण किया जा सके। और आमजन में शांति और सौहार्द बना रहे। रायला कस्बे के भीतर एक पुलिस चौकी है वह भी अक्षर बंद ही रहती है। वहां पर भी चौकी प्रभारी नियुक्त कर 2 पुलिसकर्मियों के साथ में ड्यूटी लगाई जाए । सीएलजी की मीटिंग में उपखंड अधिकारी निरमा विश्नोई पुलिस उप निरीक्षक लोकेश कुमार मीणा रायला थाना अधिकारी सुनील चौधरी समस्त रायला थाना स्टाफ उप तहसील दार गोपाल जीनगर उप प्रधान प्रतिनिधि गांव के संभ्रांत नागरिक समाजसेवी एवं सीएलजी के सदस्य उपस्थित हुए थे।

भाविप शाखा द्वारा एकादशी पर गौशाला में गाय की पूजा अर्चना की एवं लड्डु खिलाऐ!

गुलाबपुरा। रामकिशन वैष्णव स्थानीय भारत विकास परिषद शाखा द्वारा एकादशी के अवसर पर स्थाई प्रकल्प गौसेवा के अंतर्गत श्री माधव गौ उपचार केंद्र मे परिषद मातृशक्ति द्वारा गौमाता पूजन कर उन्हे लड्डुओं का भोग लगाया गया। प्रभारी ज्योति दिनवानी ने बताया कि स्थाई प्रकल्प के अंतर्गत प्रत्येक एकादशी पर श्री माधव गौ उपचार केंद्र में गायों की सेवा हेतु विविध कार्यक्रम आयोजित किए जाने की श्रृंखला में चारे की व्यवस्था की गई। परिषद द्वारा प्रभारी रमेश सोनी को श्री माधव गौ उपचार केंद्र हेतु राशि भेंट की गई । इस अवसर पर प्रांतीय प्रभारी किशोर राजपाल, संस्कार प्रमुख भगवती मूंदड़ा एवं नवनिर्वाचित अध्यक्ष कन्हैया लाल सोनी, दिनेश राजपुरोहित उपाध्यक्ष रतन लाल लखारा, हुरडा एक शाखा एक गांव प्रभारी मंजू लखारा एवम् रमेश सोनी आदि उपस्थित थे । लड्डुओं की व्यवस्था कन्हैया लाल सोनी द्वारा पुत्र विवाह के उपलक्ष में की गई।

होलिका पर्व सहित त्यौहारों को लेकर पुलिस थाने में सीएलजी सदस्यों की बैठक आयोजित!

गुलाबपुरा, रामकिशन वैष्णव। स्थानीय पुलिस थाने में होलिका पर्व सहित त्यौहारों को लेकर एसडीएम विनोद कुमार मीणा व पुलिस उपाधीक्षक लोकेश मीणा के सानिध्य में सीएलजी सदस्यों

की बैठक आयोजित हुई! बैठक में होलिका दहन, शीतलाष्टमी सहित त्यौहारों को सद्भाव, शान्ति पूर्वक, सौहार्द महौल में मनाने की अपील की गई ! एसडीएम मीणा ने सीएलजी सदस्य को भी अपना दायित्व निभाने हेतु कहा गया तथा कोई भी सूचना होतो थाने में देने की बात कही! बैठक में तहसीलदार शिल्पा चौधरी, थानाधिकारी गजराज चौधरी, पालिका से घनश्याम नवाल, पार्षद महावीर लढा, रामदेव खारोल, ज्ञानचंद कोठारी, केदार मल बैरवा, गजराज चौधरी हुरडा, सलीम बाबू, मुन्ना भाई, कयूम मो.धनराज बैरवा, रामकुमार चौधरी, पुखराज जाट, विकास आचार्य, महबूब कायमखानी, सहित सीएलजी सदस्य मौजूद थे!

सीएमएचओ अलवर के निर्देशन मे रैणी बीसीएमओ दिनेश कुमार मीना ने ब्लॉक स्तरीय मिटिंग आयोजित की

रैणी(अलवर)महेश चन्द मीना। अलवर सीएमएचओ के निदेर्शानुसार रैणी बीसीएमओ दिनेश कुमार मीना स्वास्थ्य विभाग की रैणी ब्लॉक स्तरीय मिटिंग बुलाई गई जिसमे एचएमआईएस/पीसीटीएस/आशा सोफ्ट/ओजेएएस/आरसीएच रजिस्टर की ट्रेनिंग का मिटिंग ब्लॉक रैणी मे रखी गई जिसमे बीसीएमओ दिनेश कुमार मीना एवं अलवर से एएसओ मीनू किशोर एवं सभी सीएचसी/पीएचसी के चिकित्सा अधिकारी प्रभारी एवं एएनएम एलएचवी पीएचएस अकाउंटेंट एवं कम्प्यूटर ऑपरेटर उपस्थित रहे। डॉक्टर आर.डी .मीना , डॉक्टर के.सी.मीना एसएमओ व डॉक्टर अजित मीना , डॉक्टर करण सहाय और डॉक्टर अरूण मीना , डॉक्टर महेश मीना एवं सीनियर नर्सिंग ऑफि सर घनश्याम शर्मा एवं अकाउंटेंट मुकेश कुमार सैनी एवं बीएनओ अजय कुमार टाक तथा बीपीएम अशोक कुमार बैरवा सहित अनेक स्वास्थ्यकर्मी मौजूद रहे। मिडिया को यह सारी जानकारी रैणी बीसीएमओ दिनेश कुमार मीना के द्वारा दी गई है।

गरीबों का सितारा में प्रकाशित खबर, लेख व विचार लेखकों एवं संवाददाताओं के अपने हैं इसमें संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है। सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र जयपुर होगा।

चिंतन

चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति पर सुप्रीम फैसला ऐतिहासिक

चुनाव आयोग के कामकाज में अधिक विश्वसनीयता लाने के मकसद से मुख्य चुनाव आयुक्त और चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला ऐतिहासिक है। सीईसी और ईसी की नियुक्ति अब सीधे केंद्र सरकार नहीं कर सकेगी, बल्कि इन अहम पदों पर नियुक्ति की सिफारिश प्रधानमंत्री, लोकसभा में नेता विपक्ष या सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी के नेता और चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया की कमेटी करेगी। कॉलेजियम जैसी इस कमेटी की तरफ से चुने गए व्यक्ति को राष्ट्रपति पदों पर नियुक्त करेंगे। सर्वोच्च अदालत ने कहा है कि जब तक इस बारे में संसद से कानून पारित नहीं हो जाता, तब तक यही व्यवस्था लागू रहेगी। खास बात है कि सुप्रीम कोर्ट ने ये फैसला सर्वसम्मत से सुनाया है। अभी चुनाव आयुक्त की नियुक्ति प्रधानमंत्री और मंत्रिमंडल की सिफारिश के बाद राष्ट्रपति की ओर से की जाती है। चुनाव आयुक्त का एक तय कार्यकाल होता है, जिसमें 6 साल या फिर उनकी उम्र (जो भी ज्यादा हो) को देखते हुए रिटायरमेंट दिया जाता है। चुनाव आयुक्त की सेवानिवृत्ति की अधिकतम उम्र 65 साल निर्धारित की गई है। इस फैसले के बाद अब चुनाव आयुक्तों की नियुक्तियों में बड़ा बदलाव होने वाला है। चूंकि, चुनाव आयोग के कामकाज पर लंबे समय से सवाल उठते रहे हैं। चुनाव आयोग पर सत्तापक्ष परस्ती के आरोप लगते रहे हैं। पहले अकेले मुख्य चुनाव आयुक्त होते थे, जिनपर सवाल उठे तो चुनाव आयुक्त तीन सदस्यीय बनाए गए। इसके बावजूद चुनाव आयोग की कार्यशैली पर फिर से सवाल उठने लगे। देश में हर साल कोई न कोई चुनाव होते हैं और जीत या हार के बाद ज्यादातर राजनीतिक दल सीधे चुनाव आयोग पर आरोप लगाने लगते हैं। इससे चुनाव आयोग की विश्वसनीयता पर सवाल उठ रहे थे। अब इस फैसले के बाद चुनाव आयोग स्वतंत्र होकर काम कर सकेगा। पार्टियों व नेताओं पर आयोग एक्शन ले सकेगा। अनुभवी व योग्य लोग आयुक्त बन सकेंगे। मौजूदा चुनाव आयुक्तों पर शीर्ष कोर्ट के इस फैसले का असर नहीं पड़ेगा। सरकार पर भी अपने अधिकार का चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति में दुरुपयोग करने के आरोप लगे हैं। इस आरोप पर भी अब विराम लगेगा। चुनाव आयोग के कामकाज में अधिक विश्वसनीयता आने की उम्मीद बढ़ी है। जस्टिस केएम जोसेफ की अध्यक्षता वाली 5 जजों की संविधान पीठ ने यह कह कर एक तरह से चेताया है कि 'लोकतंत्र में लोगों का भरोसा बना रहना जरूरी है और ऐसा तभी हो सकता है, जब चुनाव आयोग का कामकाज उन्हें विश्वसनीय लगे।' सुप्रीम कोर्ट ने मामले की सुनवाई के दौरान भी सरकार की तरफ से चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति को गलत बताया था। शीर्ष कोर्ट ने कहा था कि 'मुख्य चुनाव आयुक्त के पद पर एक ऐसा व्यक्ति बैठा होना चाहिए जो अगर जरूरत पड़े, तो प्रधानमंत्री के पद पर आसीन व्यक्ति के ऊपर कार्रवाई करने में भी संकोच न करे'। गत 24 नवंबर को संविधान पीठ ने मामले में दाखिल 4 याचिकाओं पर आदेश सुरक्षित रखा था। इन याचिकाओं में मांग की गई थी कि चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति की व्यवस्था पारदर्शी होनी चाहिए, चुनाव आयोग को आर्थिक स्वायत्तता मिलनी चाहिए और मुख्य चुनाव आयुक्त को पद से हटाने के लिए जो प्रक्रिया है, वही चुनाव आयुक्तों पर भी लागू होनी चाहिए। फिलहाल मुख्य चुनाव आयुक्त को सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट के जजों की तरह संसद में महाभियोग प्रस्ताव लाकर ही हटाया जा सकता है, लेकिन चुनाव आयुक्तों को मुख्य चुनाव आयुक्त की सिफारिश पर सरकार हटा सकती है। चुनाव आयोग को स्वतंत्र व आर्थिक स्वायत्त होना ही चाहिए।

सारा संसार

हिमाचल प्रदेश स्थित चंद्रताल बारालाचा एक आदर्श ट्रेक डेस्टिनेशन है जो प्रकृति की सुंदरता और रोमांच और शांति से भरपूर है। चंद्रताल 4,300 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है जो हिमालय क्षेत्र में ऊंचाई वाली झीलों में से एक है।

दिवस विशेष

अरविंद जयतिलक

वन्य जीवों को बचाने की चुनौती

विश्व वन्यजीव कोष की 'लिविंग प्लैनेट' रिपोर्ट 2022 का यह खुलासा चिंतित करने वाला है कि वन्यजीव आबादी में साल 1970 से 2018 के बीच तकरीबन 69 प्रतिशत की कमी आई है। चूंकि यह रिपोर्ट 5230 नस्लों की तकरीबन 32000 आबादी पर केंद्रित है लिहाजा इसकी विश्वसनीयता पर संदेह नहीं किया जा सकता। देखें तो यह पहली बार नहीं है जब वन्यजीवों की घटती आबादी को लेकर चिंता जताई गई है। अभी गत वर्ष ही नेशनल ऑटोनॉमस यूनिवर्सिटी ऑफ मैक्सिको और स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने दावा किया था कि पृथ्वी अपने छठे व्यापक विनाश युग में प्रवेश कर चुकी है। वैज्ञानिकों का आंकलन है कि आगामी वर्षों में जीवों की कुल प्रजातियों में से 75 प्रतिशत विलुप्त हो सकती है। यह शोध प्रासीडिंग्स ऑफ द नेशलन एकेडमी ऑफ साइंसेज नामक जर्नल में प्रकाशित हुआ। इस रिपोर्ट के आंकड़ों के मुताबिक पिछले सौ वर्षों में धरती से 200 वर्टीबेट जीवों की प्रजातियां विलुप्त हुई है। शोध के नतीजे बताते हैं कि अब तक पृथ्वी से 50 प्रतिशत से अधिक लुप्त हो चुके हैं। इनकी संख्या अरबों में है। गत वर्ष वर्ल्ड वाइल्ड फंड एवं लंदन की जूओलॉजिकल सोसायटी की रिपोर्ट से भी खुलासा हुआ था कि 2020 तक धरती से दो तिहाई वन्य जीव खत्म हो जाएंगे। इस रिपोर्ट में कहा गया था कि दुनिया भर में हो रही जंगलों की अंधाधुंध कटाई, बढ़ता प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन के कारण पिछले चार दशकों में वन्य जीवों की संख्या में भारी कमी आई है। इस रिपोर्ट में 1970 से 2012 तक वन्य जीवों की संख्या में 58 प्रतिशत की कमी बताई गई है। हाथी और गोरिल्ला जैसे लुप्तप्राय जीवों के साथ-साथ गिद्ध और रेंगने वाले जीव तेजी से खत्म हुए हैं। रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि 2025 तक 67 प्रतिशत वन्य जीवों की संख्या में कमी आ सकती है। जीवों के लुप्त होने का एक कारण इंसानों द्वारा शिकार का लालच भी है। उदाहरण के लिए आर्कटिक लोमड़ियों की संख्या तेजी से घट रही है। ये माइनस 70 डिग्री सेंटीग्रेड से कम तापमान में भी अपने विशेष गर्म फर के कारण प्रसिद्ध हैं। इनका शिकार कर मोटा धन कमाया जा रहा है। आसमान में अपने करतबों के लिए चर्चित पक्षी हेन हैरियर का बड़े पैमाने पर शिकार हो रहा है। ब्रिटेन में रॉयल सोसायटी फॉर से प्रोटेक्शन ऑफ बर्ड्स द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण से खुलासा हुआ है कि पिछले 6 साल में ब्रिटेन में हेन हैरियर की कुल संख्या यानी 545 जोड़ों में 88 जोड़ों यानी 13 प्रतिशत की कमी आई है। भारत में जीवों के संरक्षण के लिए कानून बने हैं। लेकिन इसके बावजूद भी जीवों का संहार जारी है। जैव विविधता को बचाने के लिए आवश्यक है कि जीवों को बचाया जाए। अस्तिव के संकट में फंसे जीवों को बचाने के लिए जरूरी है कि धरती के बढ़ते तापमान एवं प्रदूषण की रोकथाम की दिशा में ठोस पहल हो। वन क्षेत्र को कम करके कृषि विस्तार की योजनाओं पर भी रोक लगनी चाहिए। स्थानान्तरण खेती को नियंत्रित किया जाए तथा यदि संभव हो तो उसे समाप्त ही कर दिया जाए। नगरों के विकास के लिए वनों की कटाई पर भी रोक लगनी चाहिए। उचित होगा कि वैश्विक समुदाय वन्य जीवों को बचाने के लिए ठोस रणनीति बनाए अन्यथा वन्य जीवों की विलुप्ति मानव जीवन को भी संकट में डाल सकती है।

चुनाव नतीजे चौंकाने वाले नहीं

विश्लेषण

अवधेश कुमार

> पूर्वोत्तर के तीन राज्यों के विधानसभा चुनाव परिणामों में चौंकाने वाला कोई तत्व नहीं है। वास्तव में परिणाम लगभग उम्मीदों के अनुरूप ही हैं। तीनों राज्यों त्रिपुरा, नागालैंड व मेघालय के चुनाव परिणामों को एक साथ मिलाकर देखें तो कुछ बातें बिल्कुल स्पष्ट हैं। एक, अब वह पूर्वोत्तर की प्रमुख स्थापित पार्टी हो गई है। दूसरे, एक समय पूर्वोत्तर पर एकछत्र राज करने वाली कांग्रेस पार्टी की क्षरण प्रक्रिया लगातार जारी है। तीसरे, पूर्वोत्तर में तृणमूल के प्रमुख पार्टी के रूप में उभरने की उम्मीद भी धराशायी हुई है। वाम दलों की पुनर्वापसी की संभावना ज्यादा कमजोर हुई है। अगर त्रिपुरा में वामदल और कांग्रेस मिलकर भी भाजपा को सत्ता से बाहर करने में सफल नहीं हुए तो इसके मायने क्या हैं?

पूर्वोत्तर के तीन राज्यों के विधानसभा चुनाव परिणामों में चौंकाने वाला कोई तत्व नहीं है। वास्तव में परिणाम लगभग उम्मीदों के अनुरूप ही हैं। तीनों राज्यों त्रिपुरा, नागालैंड व मेघालय के चुनाव परिणामों को एक साथ मिलाकर देखें तो कुछ बातें बिल्कुल स्पष्ट हैं। एक, भाजपा की सीटें किसी राज्य में थोड़े कम या ज्यादा हो, मत प्रतिशत में थोड़े बहुत अंतर आ जाएं, लेकिन अब वह पूर्वोत्तर की प्रमुख स्थापित पार्टी हो गई है। दूसरे, एक समय पूर्वोत्तर पर एकछत्र राज करने वाली कांग्रेस पार्टी की क्षरण प्रक्रिया लगातार जारी है। तीसरे, पूर्वोत्तर में तृणमूल के एक प्रमुख पार्टी के रूप में उभरने की उम्मीद भी धराशायी हुई है। चौथे, माकपा के नेतृत्व वाले वाम दलों की पुनर्वापसी की संभावना पहले से ज्यादा कमजोर हुई है। जरा सोचिए, अगर त्रिपुरा में वामदल और कांग्रेस मिलकर भी भाजपा को सत्ता से बाहर करने में सफल नहीं हुए तो इसके मायने क्या हैं? पिछले चुनाव में यद्यपि माकपा नेतृत्व वाला वाम मोर्चा सत्ता से बाहर हुआ था, लेकिन भाजपा और वाम मोर्चे के मतों में ज्यादा अंतर नहीं था। इस कारण भाजपा विरोधी और वाम मोर्चा के समर्थक यह मान रहे थे कि भले जनता ने सत्ता विरोधी रुझान में माकपा को बाहर कर दिया, लेकिन अगले चुनाव में इसकी वापसी हो सकती है। चुनाव परिणामों ने बता दिया कि वाम मोर्चे का उदय अब दूर की कौड़ी है। निश्चित रूप से इस परिणाम के क्षेत्र के साथ-साथ राष्ट्रीय राजनीति के संदर्भ में भी विश्लेषण होगा। आखिर 2024 लोकसभा चुनाव की दृष्टि से भाजपा विरोधी पार्टियां कई प्रकार के समीकरण बनाने की कवायदें कर रही हैं तो इस चुनाव का असर उस पर न पड़े ऐसा संभव नहीं। तो कैसे देखा जाए इन चुनाव परिणामों को?

यद्यपि तीनों राज्यों के चुनाव महत्वपूर्ण थे, देश का सबसे ज्यादा ध्यान त्रिपुरा की ओर था। यह पहला राज्य था जहां भाजपा ने अपने विपरीत विचारधारा वाले वाम मोर्चा को पहली बार पराजित किया था। भाजपा के पूर्व मुख्यमंत्री बिप्लव देव के शासनकाल में स्वयं पार्टी के अंदर असंतोष के स्वर तथा सरकार की कुछ नीतियों के विरुद्ध जनता में भी विरोध देखा गया। भाजपा ने मई 2022 में उनकी जगह माणिक साहा को मुख्यमंत्री बनाया। कहा जा सकता है कि चेहरा बदलने से दोनों स्तरों का असंतोष थोड़ा कम हुआ। भाजपा की सीटें और मत दोनों पिछले चुनाव से घटे हैं, लेकिन वह अपनी बदौलत 60 सदस्य विधानसभा में बहुमत पा चुकी है। इंडीजीनस पीपल्स फ्रंट यानी आईपीएफ के साथ गठजोड़ कर भाजपा ने चुनाव जीता था। इस बार भी दोनों के बीच गठबंधन था, लेकिन आईपीएफ को केवल 5 सीटें भाजपा ने दी थी। इस कारण कुछ स्थानों पर आईपीएफ भाजपा के विरुद्ध भी चुनाव लड़ रहा था। कांग्रेस और वाम मोर्चा का गठबंधन नेताओं के स्तर पर हुआ, लेकिन जमीन पर दोनों के कार्यकर्ताओं और समर्थकों के बीच तालमेल न हो सका। भाजपा के उभार के पहले राज्य में कांग्रेस और वाम मोर्चा के बीच संघर्ष की स्थिति थी। इसमें बची-खुची कांग्रेस के लोगों के लिए स्वीकार करना कठिन था कि वह उसी वाम मोर्चे के

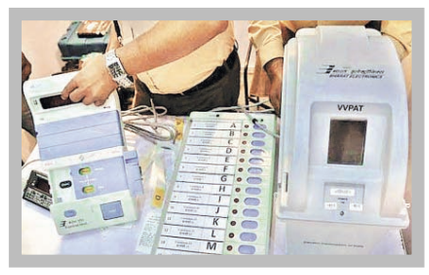

उम्मीदवार का साथ दें जिनसे उसकी लंबी लड़ाई रही है। यह इस बात को साबित करता है कि भाजपा विरोध के नाम पर भले पार्टियों का गठबंधन हो जाए, जनता ही नहीं स्वयं उन पार्टियों के कार्यकर्ता और समर्थकों के बीच सहयोग होना आसान नहीं। चुनाव के कुछ समय पूर्व बनी टिपरा मोथा पार्टी ने एक दर्जन सीटें जीतकर भी कुछ संकेत दिया है। शाही परिवार से प्रद्योत विक्रम माणिक्य देबबर्मन ने पार्टी को अलग आदिवासियों के लिए ग्रेटर त्रिपुरालैंड की मांग के साथ सामने लाया था। हालांकि मतदान के पहले कुछ नेताओं के साथ छोड़कर जाने से दुखी होकर उन्होंने घोषणा की थी कि वे अब आगे बढ़ा नीति में नहीं रहेंगे। इसके बावजूद जनता का उन्हें इतना समर्थन मिला। भाजपा ने भी अपने घोषणापत्र में आदिवासियों के लिए ज्यादा स्वायत्तता का वायदा किया था। इन दोनों पार्टियों के बीच तालमेल की पूरी संभावना है। ऐसा होता है तो यहां से त्रिपुरा की राजनीति में एक नए दौर की शुरुआत होगी।

नगालैंड की ओर देखें तो वहां भी भाजपा का प्रदर्शन संतोषजनक रहा। नेशनलिस्ट डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव पार्टी के साथ गठबंधन में वह छोटा साझेदार थी। उसे 20 सीटें ही लड़ने के लिए मिली, किंतु केंद्रीय नेतृत्व ने इसके कारण पार्टी की स्थानीय इकाई में विरोध और असंतोष उभरने नहीं दिया। छोटा साझेदार होकर भी उसने एनडीपीएस के साथ मिलकर उसी तन्मयता से चुनाव लड़ा जैसे वह अन्य राज्यों में लड़ रही थी।

निस्संदेह, मेघालय का चुनाव परिणाम भाजपा के उम्मीदों के अनुरूप नहीं है। उसे स्वयं बेहतर प्रदर्शन करने की उम्मीद थी। पिछली बार उसे 2 सीटें आई थी और एनपीईपी,पीडीएफ और एचएसबीसी के साथ मिलकर उसने मेघालय डेमोक्रेटिक एलाइंस बनाया था। एनपीईपी के साथ उसका चुनावी गठबंधन नहीं था। चुनाव के बाद असम के मुख्यमंत्री और पूर्वोत्तर जनतांत्रिक गठबंधन के संयोजक हेमंत की कोनराड संगमा से मुलाकात बताती है कि साथ मिलकर काम करने की बातचीत परिणाम के पहले ही शुरू हो गई थी। तृणमूल कांग्रेस भी यहां अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सकी और कांग्रेस को लेकर तो बहुत उम्मीद ही नहीं थी। तृणमूल कांग्रेस ने मुकुल संगमा सहित कांग्रेस के प्रमुख नेताओं को अपनी पार्टी में शामिल कर मेघालय की प्रमुख राजनीतिक शक्ति बनने की उम्मीद की थी। लगता है मेघालय के मतदाताओं को यह रास नहीं आया।

नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने पूर्वोत्तर पर विशेष फोकस किया है। वहां अपनी नीतियों, कार्यक्रमों और संवाद से अलगाववाद, क्षेत्रीय-जातीय विशेषता के भाव को भारतीय राष्ट्र भाव के साथ जोड़ने की लगातार कोशिश की। यातायात और संचार के क्षेत्र में पूर्वोत्तर में सच कहा जाए तो क्रांति हुई है। सड़कें और रेलमार्ग ही नहीं हवाई यात्राओं की दृष्टि से भी आधारभूत संरचनाएं सशक्त हुई है। बिजली की स्थिति में काफी सुधार हो चुका है। 191 उच्च शिक्षा के नए संस्थान खोले गए। उच्च शिक्षा में नामांकन में 29% की वृद्धि हुई। उग्रवाद को काबू करने के लिए सुरक्षा सख्ती के साथ क्षेत्रीय विकास और संवाद तीनों रास्ते अपनाए गए। सबसे बड़ी बात कि सशस्त्र बल विशेषाधिकार अधिनियम यानी अफस्पा को हटाने की बात अनेक पार्टियां और मानवाधिकार संगठन करते थे। उसे सही मायनों में भाजपा ने ही स्वीकार किया। इन सबके साथ पूर्वोत्तर के अलग-अलग क्षेत्रों की संस्कृतियों, स्थानीय परंपराओं, सोच और व्यवहार से लेकर स्थानीय विशेषताओं को भी प्रोत्साहित किया गया। पूर्वोत्तर के उन महापुरुषों को सामने लाकर महत्त्व दिया गया जिन्हें इतिहास के अध्याय में स्थान नहीं मिला था। इन सबका व्यापक असर हुआ है और आज पूर्वोत्तर सोच और व्यवहार की दृष्टि से समग्र रूप से भारत का बदला हुआ क्षेत्र है। इन सबकी प्रतिध्वनि चुनावों में दिखाई पड़ रही है। हालांकि अभी इन सारी दिशाओं में काफी कुछ किया जाना शेष है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया **edit@haribhoomi.com** पर दे सकते हैं।

जीवन पर कैसे पड़ता है संकल्प शक्ति का प्रभाव

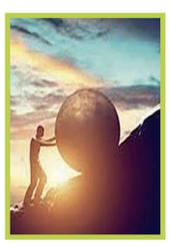

संकलित

दर्शन

संकल्प का संबंध सत्य और धर्म से होता है। शून्य से सिद्धि प्राप्ति की ओर, अधर्म से धर्म की ओर, अन्याय से न्याय की ओर, असत्य से सत्य की ओर, कायरता से साहस की ओर, मृत्यु से जीवन की ओर अग्रसर होने में संकल्प की सार्थकता है। भारतीय धर्म में अनुशासन की इस उदात्त परंपरा का ध्यान रखते हुए ही गुरुजन सत्यं वद, धर्माचरण का संकल्प अपने शिष्यों से कराते रहे हैं। आध्यात्मिक तत्वों की अभिवृद्धि की तरह ही भौतिक उन्नति की नैतिक आकांक्षा को बढ़ाना भी संकल्प के अंतर्गत ही आता है। जहां अपने स्वार्थों के लिए अधर्माचरण शुरू कर दिया जाता है, वहां संकल्प का लोप हो जाता है और वह कृत्य अमानुषिक, आसुरी, हीन और निष्कृष्ट बन जाता है। संकल्प के साथ जीवन शुद्धता की अनिवार्यता भी जड़ी हुई है। संकल्प की इस परंपरा में अपनी उज्ज्वल गाथाओं को ही जोड़ा जा सकता है। संकल्प को इसी जीवन की उत्कृष्टता का मंत्र समझना चाहिए। उसका प्रयोग मनुष्य जीवन के गुण विकास और सिद्धि प्राप्ति के लिए होना चाहिए। संकल्प चिरस्थायी होते हैं और सूक्ष्म जगत में इनका बड़ा प्रभाव पड़ता है। ये व्यक्ति के मन पर अपना अधिकार जमाकर उन्हें आकर्षित करते हैं। एक सशक्त संकल्प वाले मस्तिष्क से दूसरे मनुष्य के मन में विचारधाराएं जाती हैं। जिस प्रकार भक्त प्रह्लाद ने अपनी संकल्प शक्ति से ईश्वर के पास अपनी प्रार्थना भेजी और अग्नि में कभी न जलने का वरदान प्राप्त होलिका से प्राणों की रक्षा की।

धन कमाने के साथ भक्ति भी करें

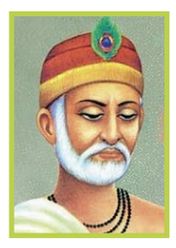

संकलित

प्रेरणा

संत कबीरदास जी से जुड़ा एक किस्सा है। कबीरदास जी के जीवन की कई ऐसी घटनाएं हैं, जिनमें जीवन को सुखी और सफल बनाने के सूत्र छिपे हैं। कबीरदास जी कपड़ा बुनने के काम के साथ भगवान का ध्यान भी करते रहते थे। वे ये दोनों ही काम बहुत ही एकाग्रता के साथ करते थे। एक शिष्य ने कबीरदास जी को काफी दिनों से देख रहा था। एक दिन उसने कबीरदास जी पूछा कि आप भक्त हैं, लेकिन मैं कई दिनों से देख रहा हूं कि आप हमेशा ही कपड़े ही बुनते रहते हैं तो आप भक्ति कब करते हैं? कबीरदास जी अपने शिष्यों की शंकाओं का समाधान अलग अंदाज से करते थे, ताकि उन्हें जो संदेश मिले, वह जीवनभर याद रहे। उन्होंने उस शिष्य से कहा कि पहले मेरे साथ चलो थोड़ा घूम आते हैं। शिष्य तैयार हो गया और दोनों साथ चलने लगे। रास्ते में उन्होंने देखा कि एक महिला कुएं से पानी भरकर लौट रही थी। उसके सिर पर पानी से भरा घड़ा रखा हुआ था और वह अपनी मस्ती में गीत गाते हुए चल रही थी। उस महिला ने घड़े को पकड़ा नहीं था, लेकिन घड़ा सिर पर स्थिर था और घड़े से पानी भी छलक नहीं रहा था। कबीरदास जी ने उस व्यक्ति से कहा कि वह महिला पानी लेकर आ रही है, उसके सिर पर पानी है, लेकिन वह अपनी मस्ती में गाना गाते हुए चल रही है, मटका भी स्थिर है और वह गाना भी गा रही है। वह एक साथ तीन काम कर रही है। पहला, उसका ध्यान घड़े पर है। दूसरा, उसका ध्यान रास्ते पर भी है। तीसरा, वह गाना भी गा रही है।

अंतर्मन

आज की पाती

हिंदू राष्ट्र राजनीतिक रोटियां सेंकने का माध्यम

'हिंदुत्व एक जीवन पद्धति है। इस कारण भारत ने सभी को आत्मसात किया। हम एक साथ रहने में सक्षम हुए हैं। अंग्रेजो ने फूट डालो और राज करो की नीति से यहां विद्वेष फैलाया। उस दौर को वापस न लाएं।' यह सुप्रीम कोर्ट के शब्द हैं। उसका कहना सही है। इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती है कि कुछ स्वार्थी तत्वों द्वारा देश की सदियों से चली आ रही अनेकता में एकता को ठेस पहुंचाने की कोशिश ही नही की जा रही, बल्कि जनता को धर्म व जाति के आधार पर बांट कर वोटों का ध्रुवीकरण किया जा रहा है। ऐसा लगता है कि कुछ लोगों को धर्म के नाम पर राजनीतिक रोटियां सेंकने की खुली छूट दी गई है, जो हिंदू राष्ट्र की बात खुलेआम करते हैं। *-अमन कुमार*

ट्रेंड

परियोजना का महत्व

केवल लाभार्थी ही प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि परियोजना का महत्व समझा सकता है। जन औषधि दिवस सप्ताह के दूसरे दिन आज 30 शहरों में 30 जन औषधि प्रतिज्ञा यात्राओं का आयोजन हुआ।
-मनसुख मांडविया, केंद्रीय मंत्री

काम रुकने नहीं देंगे

शराब नीति तो बहाना है। ये इत्तेफाक नहीं कि हमारे हैल्थ और शिक्षा मंत्री दोनों को गिरफ्तार कर लिया। हम काम रुकने नहीं देंगे। हमारे पास टैलेंट की कमी नहीं। आप गिरफ्तार करोगे, हम उनकी जगह और अच्छे मंत्री बना देंगे।
-अरविंद केजरीवाल, सीएम दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट का धन्यवाद

चुनाव आयोग में एक महत्वपूर्ण सुधार का निर्देश देने वाले ऐतिहासिक फैसले के लिए सुप्रीम कोर्ट का धन्यवाद; कि ईसी की नियुक्ति अकेले सरकार द्वारा नहीं की जाएगी, बल्कि पीएम, एलओपी और सीजेआई की एक समिति द्वारा की जाएगी।
-प्रशांत भूषण, वरिष्ठ अधिवक्ता

मजबूत रिश्ते खुशी की कुंजी

मजबूत रिश्ते खुशी और आनंद की कुंजी हैं। चाहे वह अपने प्रियजनों के साथ समय बिताना हो या किसी ऐसे व्यक्ति के लिए होना हो जिसे आपकी आवश्यकता है, दूसरों के साथ लंबे समय तक चलने वाले संबंध बनाना एक सुखी, पूर्ण जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा है।

करंट अफेयर

पाकिस्तान में एक दर्जन आतंकी संगठन मौजूद

अमेरिका के राष्ट्रपति चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी की उम्मीदवार बनने की दौड़ में शामिल भारतीय-अमेरिकी निक्की हेली ने कहा है कि पाकिस्तान में कम से कम एक दर्जन आतंकवादी संगठन मौजूद हैं और इस देश को अमेरिका से मदद नहीं मिलनी चाहिए। साउथ कैरोलाइना की दो बार गवर्नर रह चुकीं हेली (51) ने साल 2024 में होने वाले राष्ट्रपति चुनाव के लिए पिछले महीने औपचारिक रूप से अपना प्रचार अभियान शुरू किया था। हेली ने ट्वीट किया, 'पाकिस्तान में कम से कम एक दर्जन आतंकवादी संगठन मौजूद हैं। उसे किसी तरह की मदद नहीं मिलनी चाहिए।' पिछले कुछ दिन से हेली अमेरिकी विदेश नीति पर बात करती रही हैं और उन्होंने जोर देकर कहा है कि अमेरिका को चीन व रूस के मित्र तथा सहयोगी देशों को कोई वित्तीय सहायता नहीं देनी चाहिए। इससे पहले, रविवार को 'न्यूयॉर्क पोस्ट' के लिए लिखे गए एक लेख में हेली ने कहा था कि वह अमेरिका से नफरत करने वाले चीन और पाकिस्तान जैसे देशों के लिए वित्तीय मदद बंद कर देंगी। रविवार 'फॉक्स न्यूज' को दिए साक्षात्कार में उन्होंने अमेरिका के दो प्रतिद्वंदी देशों रूस और चीन के मित्र व सहयोगी देशों के लिए अमेरिकी मदद बंद करने की बात दोहराई थी।

ऑफ बीट

रोज 11 मिनट टहलने से जल्दी मृत्यु का खतरा कम

रोज केवल 11 मिनट या सप्ताह में 75 मिनट टहलने या मध्यम स्तर की शारीरिक गतिविधि से हृदय रोग और कैंसर समेत कई गंभीर बीमारियों के जोखिम को कम करने में मदद मिलती है। कैंब्रिज विश्वविद्यालय की अगुवाई में किए गए एक नए शोध में यह कहा गया है। मध्यम स्तर की शारीरिक गतिविधि से हृदय संबंधी रोगों और कैंसर का खतरा घटता है और एनएचएस ने वयस्कों को एक सप्ताह में 75 मिनट मध्यम स्तर की शारीरिक गतिविधि करने की सलाह दी है। अगर आपको लगता है कि एक सप्ताह में 75 मिनट की शारीरिक गतिविधि कर सकते हैं तो धीरे-धीरे आपको अनुशंसित स्तर तक गतिविधि को बढ़ानी चाहिए। दुनिया भर में सबसे ज्यादा मौतें हृदय संबंधी रोगों के कारण होती है। वर्ष 2019 में 1.79 करोड़ लोगों की मौत हृदय रोगों से हुई वहीं 2017 में 96 लाख लोगों ने कैंसर से दम तोड़ दिया। अध्ययन के मुताबिक एक सप्ताह में 75 मिनट शारीरिक गतिविधि से हृदय संबंधी रोगों का खतरा 17 प्रतिशत और कैंसर का खतरा सात प्रतिशत तक कम हो जाता है।

गरीबों का सितारा में प्रकाशित खबर, लेख व विचार लेखकों एवं संवाददाताओं के अपने हैं इसमें संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है। सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र जयपुर होगा।

सितारा न्यूज ब्रीफ

विधायक हुडला ने रखी नियम 295 के तहत मंडावर में पंचायत समिति कार्यालय खोलने की मांग

बालाहेडी, टुडियाना, गगवाना को पंचायत समिति महवा में जोड़ने की मांग

गरीबो का सितारा

महवा। विधायक ओमप्रकाश हुडला ने विधानसभा में राज्य सरकार से पिछले बजट में की गई घोषणा को वापिस सरकार को याद दिलाने के लिए राजस्थान विधानसभा के नियम 295 के अंतर्गत विशेष उल्लेख के द्वारा गगवाना ,टुडियाना,बालाहेडी को वापिस बैजुपाड़ा से महवा पंचायत समिति में जोड़ने और मंडावर पंचायत समिति की अधिसूचना जारी करने की मांग की और जल्द आदेश जारी करने की मांग भी की। गौरतलब हैं कि राजस्थान विधानसभा के पिछले बजट सत्र में विधायक हुडला ने पुरजोर तरीके से ग्रामीणों की इस मांग को सरकार के समक्ष तार्किक तरीके से रखा था और उसके बाद 11 मार्च 2022 को महवा को बजट में मिली सौगातो के लिए जब मुख्यमंत्री गहलोत का आभार जताने के लिए महवा विधानसभा क्षेत्र के लोगो के साथ मुख्यमंत्री निवास पहुचे तब भी उन्होंने मुख्यमंत्री के समक्ष इस मांग को पुरजोर तरीके से रखा। और इसके बाद उनके द्वारा दिए मांग पत्र पर कार्यवाही करते हुए दिनाक 14 मार्च 2022 को प्रमुख शासन सचिव ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज ने विधायक हुडला को इस बाबत पत्र लिख कर कार्यवाही करने के लिए भरोसा दिलाया था। उसके बाद कार्यवाही नहीं होने पर उन्होंने सरकार को विधानसभा में इस मुद्दे पर विशेष उल्लेख के द्वारा पंचायती राज मंत्री के समक्ष रखा।

सोशल मीडिया पर डाली थी फोटो पुलिस ने हथियार के साथ पकड़ा

महाकाल व इक्का गैंग से सम्बंध रखते है दोनों बदमाश

गरीबो का सितारा

वी.पी.मीणा कोटपूतली। सरूण्ड थाना पुलिस ने सोशल मीडिया पर हथियार लहराते हुए फोटो व विडियो पोस्ट डालने पर दो बदमाशों को गिरफ्तार करते हुए उनके पास से अवैध हथियार जप्त किये है। एसएचओ इन्द्राज सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि पुलिस मुख्यालय के निर्देश पर जयपुर ग्रामीण एसपी डॉ. राजीव पचार के मार्गदर्शन में सोशियल मीडिया पर हथियारों के साथ पोस्ट डालकर समाज में भय व डर फैलाने वाले बदमाशों एवं असामाजिक तत्वों के विरूद्ध विशेष अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत हार्डकोर अपराधियों, हिस्ट्रीशीटरों आदि की पोस्ट पर कमेंट, लाईक व शेयर सहित फॉलो करने वाले बदमाशों के विरूद्ध भी विशेष कार्यवाही की जा रही है। इसी क्रम में ग्राम कल्याणपुरा कलां निवासी अजीत कुमार (23) पुत्र पप्पुराम गुर्जर एवं ग्राम पुरूषोत्तमपुरा में दबिश देकर छाजुराम उर्फ राम (22) निवासी ढ़ाणी भड़ाज, तन भुरी भड़ाज, थाना प्रागपुरा को गिरफ्तार कर दोनों के कब्जे से दो अवैध हथियार सिक्सॅर रिवॉल्वर जप्त किए। पुलिस के अनुसार दोनों आरोपी समाज में डर व भय व्याप्त करने के साथ-साथ अपना दबदबा जमाने के लिए सोशियल मीडिया पर हथियारों के साथ पोस्ट डाल रहे थे। इनमें अजीत कुमार महाकाल गैंग से, जबकि छाजुराम उर्फ राम इक्का गैंग से सम्बंध रखता है। छाजुराम आदतन अपराधी है। जो पूर्व में हत्या के आरोप में बंद रह चुका है। दोनों ने उक्त हथियार अपराध की दुनिया में अपना सिक्का चलाने के लिए खरीदे थे। पुलिस द्वारा इस बाबत भी अनुसंधान किया जा रहा है कि इनकी गैंग में और कौन-कौन बदमाश सम्मिलित है। साथ ही दोनों हथियार कहां व किससे खरीदे गये है। साथ ही बदमाशों द्वारा हथियारों से कोई वारदात की गई है या नहीं। पुलिस द्वारा प्रकरण में गहनतापूर्वक अनुसंधान करते हुए बदमाशों का पूर्व का आपराधिक रिकॉर्ड भी एकत्रित किया जा रहा है।

घर पर देर रात फायरिंग से परिजनों में हड़कंप, पुलिस को मिले दो खोखे

गरीबो का सितारा

वी.पी.मीणा बहरोड़। क्षेत्र के अजमेरीपुर ग्राम में बीती रात्रि को फायरिंग की घटना घटित हुई। फायरिंग होने के पीछे आपसे जमीनी विवाद भी बताया जा रहा है। लेकिन फायरिंग की घटना के विषय में पुलिस थाने में मामला दर्ज नहीं हुआ। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस को परिवार के लोगों ने दो खाली खोखे दिए। फायरिंग करने वालों की पहचान नहीं हुई। थाना अधिकारी विरेंद्र पाल ने बताया कि बीती रात्रि को 11 बजे सूचना मिली कि गांव अजमेरीपुर में एक मकान पर फायरिंग की गई है। जहां शीशराम चौधरी पुत्र बंसीराम चौधरी के घर पर फायरिंग की घटना की पुष्टि हुई। एक गोली स्कॉर्पियो गाड़ी के शीशे पर लगी तो दूसरी गोली जंगले में लगे हुए शीशे पर लगी हुई थी। पूछताछ में परिवार के लोगों ने बताया कि फायरिंग करने वाले खेतों की तरफ भाग गए जिससे उनकी पहचान नहीं हो पाई। साथ ही थाना अधिकारी ने बताया कि शीशराम चौधरी का ससुराल नांगल चौधरी के पास तोताड़ी ग्राम में है उनके ससुर सुल्तान सिंह के नाम गांव में 21 किला जमीन थी उनके तीन बेटे और चार बेटियां थी तीनों बेटों की मृत्यु हो चुकी है दो बेटियों का ससुराल बहरोड़ थाना क्षेत्र के जागुवास तथा अन्य दो बेटियों का ससुराल अजमेरीपुर में है। सुल्तान सिंह ने अपने जीते हुए 15 किला जमीन अपने तीनों बेटों के नाम करवा दी थी जबकि 16 किला जमीन बेटियों के हिस्से की अपनी पत्नी भगवानी देवी के नाम कर दी गई। परिवार के लोगों ने बताया कि सुल्तान सिंह के दो बेटे शादीशुदा थे दोनों की मृत्यु हो चुकी दो की संतान है जबकि सबसे छोटा बेटा और मां अजमेरीपुर में रहते हैं यहां रहते हुए सुल्तान सिंह के सबसे छोटे बेटे की भी लंबी बीमारी के कारण मौत हो गई। जबकि उनकी पत्नी भगवानी देवी 80 वर्षीय एकदम बुजुर्ग है जो अपनी बेटी के पास यही रहती है। चारों बेटियों के बीच जमीन को लेकर लंबे समय से विवाद चल रहा है। भगवानी देवी की बेटी और शीशराम की पत्नी शांति देवी ने पुलिस को बताया कि उसकी बहन के जेठ के लड़के ने धमकी दी थी। संभावना जताई जा रही है कि उसी के कहने पर घर पर फायरिंग की गई है।

राजकीय पटेल उच्च माध्यमिक विद्यालय से स्थानांतरित हुए प्रधानाचार्यो का हुआ भव्य अभिनंदन एवं स्वागत

शिक्षा ही हमारी असली पूंजी हम बढ़ाएंगे पटेल का गौरव

गरीबो का सितारा

ब्यावर(अनिल सिखवाल)। राजकीय पटेल उच्च माध्यमिक विद्यालय से स्थानांतरित प्रधानाचार्य भगवान सहाय जारोडिया, प्रधानाचार्य रोहित जैन, प्रधानाचार्य जितेंद्र सिंह चौहान, अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी वर्धमान जैन का विदाई समारोह प्रधानाचार्य अब्दुल हनीफ खान की अध्यक्षता में संपन्न हुआ वर्तमान परिपेक्ष में शिक्षा ही हमारी असली पूंजी है छात्र जीवन अमूल्य जीवन है इसमें प्रत्येक छात्र को अपने जीवन को बनाने के लिए समुचित शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए ऐसे उद्गार पटेल स्कूल में आयोजित विदाई समारोह में प्रधानाचार्य अब्दुल हनीफ खान तथा विदाई लेने वाले प्रधानाचार्य ने अपने संस्मरण सुनाते हुए बालकों को अच्छी से अच्छी शिक्षा ग्रहण करने तथा स्कूल का गौरव बढ़ाते हुएअपनी कक्षाओं में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने अपने माता पिता तथा गुरुजनों का आदर करते हुए समाज में यथा स्थान प्राप्त करने हेतु प्रेरित किया। विदा होने वाले प्रधानाचार्य जारोडिया, रोहित जैन, जितेंद्र सिंह चौहान, अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी वर्धमान जैन का शाला परिवार ने माल्यार्पण साफा बंधा कर तथा स्मृतिचिन्ह देकर बहुमान किया कार्यक्रम को विदा होने वाले अधिकारियों सहित प्रधानाचार्य अब्दुल हनीफ खान प्रधानाचार्य दिनेश सिंह चौहान परमेश्वर सिंह गुरुशरण गोयल स्टाफ सेक्रेटरी मुकेश प्रजापति ने संबोधित किया कार्यक्रम में देवानंद किशन वैष्णव, रमेश चंद महरानिया, खीमराज कटारिया, भोपाल सिंह, शिवलाल, मिश्रीलाल प्रजापति, नरेश कुमार वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक केवल चंद फुलवारी विष्णु दत्त गोयल सौरभ धाभाई हेमंत कुमावत महेंद्र पाल वर्माश्रीमती कंचन परिहार मीतू मिश्रा प्रीति परिहार डॉ संगीता लालवानी मनीषा पारीक अंजना जेठवा कल्पना कुमावत जानकी टाक अमित गंगवानी सहित स्टाफ बंधु मौजूद रहे समारोह का संचालन उप प्रधानाचार्य गुरुशरण गोयल ने किया।

राजकीय कॉलेज में सात दिवसीय शिविर का हुआ आयोजन

गरीबो का सितारा

वी.पी.मीणा बहरोड़। कस्बे के राजकीय महाविद्यालय में शुक्रवार को महाविद्यालय प्रांगण में सात दिवसीय शिविर के समापन सत्र का प्रारंभ दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। प्राचार्य डॉ राजेश कुमार शर्मा ने बताया की मुख्यातिथि ड़ॉ आदर्श अग्रवाल, विशिष्ट अतिथि सुनील शर्मा उद्योगपति,रितु शर्मा,अनुपमा शर्मा, एईएन शालिनी यादव ने दीप प्रज्वलन के साथ सत्र का उद्घाटन किया। कार्यक्रम में एनएसएस प्रभारी अनिल कुमार एवं अनीता राज के द्वारा अतिथियों का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया गया। एनएसएस प्रभारी अनिल कुमार ने बताया की कैंप में छात्र-छात्राओं ने पूरी सामर्थ्य शक्ति के साथ स्वच्छता का कार्य किया, महाविद्यालय में छात्र छात्राओं द्वारा साफ स्वच्छता का कार्य किया, एनएसएस के छात्र-छात्राओं ने इंदिरा कॉलोनी मोक्षधाम में सफाई, इंद्रा कॉलोनी में सर्वे, वृक्षारोपण,पक्षियों के लिए परिंडे में पानी रखना,साफ स्वच्छता अभियान द्वारा सफाई का संदेश दिया, छात्र छात्राओं के द्वारा एनएसएस द्वारा गोद ली गई बस्ती में ये सब कार्य किये गए।सात दिवस के दौरान छात्र-छात्राओं ने पोस्टर रंगोली आदि पर्यावरण संबंधी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई विभिन्न खेल प्रतियोगिताएं जैसे म्यूजिकल चेयर रस्साकशी, नींबू, चम्मच दौड़ आदि प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पारितोषिक दिया गया। इस दौरान कॉलेज स्टाफ मौजूद रहा।

टोक जिला कलेक्टर और एसपी ने शान्ति समिति व जिला स्तर सीएलजी मिटिंग बुलाई

राष्ट्रीय मानवाधिकार एवं भ्रष्टाचार निवारण भारत संगठन जिला सम्भाग अध्यक्ष जरीना खान शान्ति समिति/सीएलजी सदस्य भी की आमंत्रित

गरीबो का सितारा

रैणी(अलवर)महेश चन्द मीना। राष्ट्रीय मानवाधिकार एवं भ्रष्टाचार निवारण भारत संगठन की टोक जिला सम्भाग अध्यक्ष जरीना खान ने मिडिया को बताया कि टोक कलेक्ट्रेट में मीटिंग रखी गई थी शांति समिति और जिला स्तर सीएलजी कलेक्टर टोक व ग्रामीण एसपी केवेंद्र सागर सीटी एसपी साहब शरद चौधरी और कलेक्टर बुनकर जिला अध्यक्ष त्यागी शहर काजी जुबेर बाबा लाखा सिंह गुरुद्वारे से बड़गांव पंकज मेहता है आईजी कार्यालय इंदु गौतम मैडम राष्ट्रीय मानव अधिकार और भ्रष्टाचार निवारण से जिला सम्भाग अध्यक्ष जरीना खान सीएलजी सदस्य नरेंद्र और समस्त पदाधिकारी उपस्थित रहे होली तथा अनेक त्योहारों को लेकर मीटिंग रखी गई थी शहर में अमन शांति बने रहे इसी सिलसिला में मीटिंग रखी गई थी। यह सारी जानकारी राष्ट्रीय मानवाधिकार एवं भ्रष्टाचार निवारण भारत संगठन की जिला संभाग कोटा अध्यक्ष जरीना खान के द्वारा दी गई है।

शोध कार्यशाला में उपकल्पना निर्माण, एसपीएसएस का उपयोग ,प्राचीन पांडुलिपियों के पठन एवं सर्वेक्षण पद्धतियों के प्रकारो पर हुई चर्चा

गरीबो का सितारा

ब्यावर (अनिल सिखवाल)। शहर जो अजमेर जिले की हृदय स्थली के रूप में काफी ख्याति प्राप्त है उक्त शहर के उदयपुर रोड स्थित एसडी गवर्नमेंट कॉलेज में शुक्रवार को शोध कार्यशाला में उपकल्पना निर्माण एवं जांच प्रकरण पर डॉ दुष्यंत त्रिपाठी ने विचार व्यक्त किए, एसपीएसएस का उपयोग एवं इसके द्वारा सहसंबंध तथा प्रतीपगमन की गणना के संदर्भ में डॉ एमआर सिंगारिया ने विचार रखे जबकि प्राचीन पांडुलिपियों का पठन एवं उन पर शोध डॉ हरीश कुमार ने वक्तव्य रखा इसी तरह सर्वेक्षण पद्धतियों के प्रकार एवं उपयुक्त पद्धति का चयन पर डॉ अशोक सीईएसपी ने सारगर्भित शब्दावली में अपने विचार प्रस्तुत किए प्राप्त जानकारी के अनुसार डॉ एम आर सिंगारीया ने रिसर्च में एस पी एस एस तकनीक के प्रयोग का प्रशिक्षण शोधकताओं को दिया। उन्होंने कहा यह तकनीक समाज विज्ञान से संबंधित शोध को प्रामाणिकता प्रदान करता है। वर्तमान में आंकड़ों पर आधारित शोध कार्य का ही महत्व है और यही शोध कार्य पालिसी मेकर के रूप में सम्मिलित किया जाता है। इसके लिए समाज विज्ञान के विषयों में एस पी एस एस तकनीक का अत्यधिक महत्व है।द्वितीय तकनीकी सत्र में डॉ हरीश कुमार ने प्राचीन हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के पाठ एवं अनुसंधान पर चर्चा की, उन्होंने कहा हस्तलिखित पाण्डुलिपियां के अध्ययन एवं संरक्षण के लिए युवाओं को आगे आना चाहिए क्योंकि संरक्षण के बिना यह अमूल्य धरोहर नष्ट हो जाएगी। द्वितीय वक्ता जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली प्रोफेसर अशोक ने कहा रिसर्च और रिपोर्ट में अन्तर होता है इसे शोधकर्ता को समझना होगा क्योंकि वर्तमान में जो रिसर्च हो रहा है रिपोर्ट है जिसमें एक प्रशासनिक अधिकारी की तरह हम आस पास की समस्या पर आंकड़े एकत्रित कर रिपोर्ट रूप में शोध ग्रंथ तैयार कर लेते हैं। शोध परिकल्पना तैयार करने से पहले समस्या से सम्बंधित उपलब्ध साहित्य की समीक्षा आवश्यक है। उन्होंने बताया कि शोध विषय का निर्धारण करते समय अधिकांशतः शोधकर्ता स्थानीय समस्या का चुनाव करते हैं लेकिन जो सही नहीं है क्योंकि जब तक आप शोध समस्या का औचित्य सिद्ध नहीं करते तब तक आपके शोध की सार्थकता सिद्ध नहीं हो पाती।

हथियार की नोंक पर डकैती की वारदात के आरोपी गिरफ्तार

ग्देवता माईंस रॉयल्टी नाका पर फायरिंग डकैती की वारदात को दिया था अन्जाम

गरीबो का सितारा

वी.पी.मीणा कोटपूतली। क्षेत्र के पनियाला एवं सरूण्ड थाना की संयुक्त पुलिस टीम ने पनियाला थाना क्षेत्र के ग्राम देवता स्थित एक माईंस पर 3 फरवरी 2022 को हथियार की नोंक पर फायरिंग कर डकैती की वारदात के आरोपी को गिरफ्तार किया है। घटनाक्रम में पुलिस द्वारा 4 आरोपियों को पूर्व में ही गिरफ्तार किया जा चुका है। उक्त बदमाशों ने 15 दिन के अन्तराल में ही देवता में डकैती की दो वारदातों को अन्जाम दे दिया था। एसएचओ इन्द्राज सिंह ने बताया कि आरोपियान द्वारा ग्राम देवता स्थित माईंस व रॉयल्टी नाके पर दिन में रैकी करने के बाद रात्रि में हथियारों से लैस होकर बोलेरो गाड़ी में सवार होकर नाका पर तैनात कर्मचारियों को जान से मारने की नीयत से वारदात को अन्जाम देते हुए फायरिंग कर मारपीट करते हुए रॉयल्टी नाके से 45 हजार एवं सहज भारती माईंस से 01 लाख 30 हजार रुपए की डकैती डालकर फरार हो गये थे। प्रकरण में पुलिस टीम द्वारा 4 बदमाशों को पूव में ही गिरफ्तार किया जा चुका है। जबकि पाँचवें आरोपी मनोज कुमार (21) पुत्र अमरसिंह जाट निवासी अजमेरीपुर, बहरोड़ (अलवर) को पुलिस ने प्रोडक्शन वारन्ट पर सबजेल कोटपूतली से गिरफ्तार किया। उल्लेखनीय है कि उक्त बदमाश को पनियाला थाना पुलिस द्वारा विगत 21 फरवरी को ग्राम अजमेरीपुर, बहरोड़ से गिरफ्तार किया गया था। प्रकरण में पुलिस द्वारा फरार आरोपी अजय कुमार जाट निवासी बरौंदा, सोनीपत के बारे में जानकारी ली जा रही है। साथ ही वारदात में प्रयुक्त किये गये हथियारो के बारे में भी अनुसंधान किया जा रहा है। आरोपी मनोज कुमार जाट के विरूद्ध अलवर जिले के बहरोड़ व जयपुर ग्रामीण के पनियाला थाने में आर्म्स एक्ट, हत्या के प्रयास, मारपीट, लूट समेत गंभीर धाराओं में प्रकरण दर्ज है।

कलेक्टर के व जिला प्रशासन के निर्देशन मे रैणी की बीलेटा पंचायत मे रास्ता खोलो अभियान के तहत तीन रास्ते खुलवाये

रास्ते खुलवाकर प्रतिभावन बेटियो के नाम की बेटिया गौरव पट्टिका लगाई

गरीबो का सितारा

रैणी(अलवर)महेश चन्द मीना। अलवर जिले के रैणी उपखण्ड क्षेत्र की ग्राम पंचायत बीलेटा मे शुक्रवार को जिला प्रशासन के निर्देशन ने रैणी नायब तहसीलदार रामखिलारी मीना की मौजूदगी मे बीलेटा सरपंच नवल किशोर गुर्जर की उपस्थिति मे तीन रास्तो को खोलकर होनहार प्रतिभावन बेटियो के नाम की बेटिया गौरव पट्टिका लगवाई गई। बीलेटा सरपंच नवल किशोर गुर्जर ने मिडिया को बताया कि शुक्रवार को राजस्व विभाग की सारी टीम के साथ नायब तहसीलदार रामखिलारी मीना की मौजूदगी मे खरखडी जोहड से मनोहरी के मकान की और रास्ता खोलकर संजना बाई , मुस्कान , मान्यता नाम की होनहार बेटियो के नाम की पट्टिका लगाई गई यह रास्ता 1000 मीटर 03 मार्च 2023 को खुलवाया गया तथा इसी तरह से मोहर सिंह के मकान से सताना की और जाने वाले रास्ते को खुलवाकर प्रतिभावन बेटियो के नाम की गौरव बेटिया पट्टिका लगाई गई। इस दौरान रैणी नायब तहसीलदार रामखिलारी, पटवारी संजय मीना, कृष्ण कुमार, गोपाल लाल कोली, कानूनगो लालाराम मीना, भागचंद मीना, मुकेश मीना व बिलेटा सरपंच नवल किशोर गुर्जर ग्राम विकास अधिकारी संदीप मीना, एलडीसी ईश्वर दयाल मीना सहित अनेक गणमान्य नागरिक व ग्रामीण लोग मौजूद रहे मिडिया को यह सारी जानकारी बीलेटा सरपंच नवल किशोर गुर्जर के द्वारा दी गई है।

गरीबों का सितारा में प्रकाशित खबर, लेख व विचार लेखकों एवं संवाददाताओं के अपने हैं इसमें संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है। सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र जयपुर होगा।

सितारा न्यूज ब्रीफ

ईमान जिंदा है : कॉन्स्टेबल विनोद कुमार ने दिया ईमानदारी का परिचय

गरीबों का सितारा

खाटूश्यामजी। (विनोद धायल)। आज के इस कलयुग में चंद रुपए के लिए लोगों का ईमान डगमगा जाता है। लेकिन आज भी कई लोगों में ईमानदारी जिंदा हैं। इसका उदाहरण खाटूश्यामजी थाने के कांस्टेबल विनोद कुमार ने दिया। कहते है कि जब भी हमारी कोई अहम चीज खो जाती है तो बड़ी तकलीफ होती है। खासकर अगर मोबाइल जैसा कोई महत्वपूर्ण डिवाइस हो, जिसमें कॉन्टैक्ट्स, फोटो जैसी खास चीजें हों। ऐसे में अगर कोई आपको खोया हुआ मोबाइल वापस दिला दे तो खुशी का ठिकाना नहीं रहता। खुशियों से भरा ऐसे ही नजारा दिखा जब खाटूश्यामजी थाने के कांस्टेबल विनोद कुमार ने खोए हुए 2 मोबाइल उनके मालिकों को वापस लौटाया तो उनके चेहरों पर मुस्कान लौट आई। वह भी तब जब वे अपने मोबाइल मिलने की उम्मीद छोड़ चुके थे। खाटू थाने के कॉन्स्टेबल विनोद कुमार ने जनता के बीच पुलिस पर विश्वास को मजबूत कर दिखाया है। जिस पुलिस की छवि को लेकर जनता कई बातें बिखेरती थी और उसकी आलोचना करती थी वो आज खाटू थाने का शुक्रिया अदा कर रही रही है। पश्चिम बंगाल निवासी संजय ने बताया कि खाटू श्याम जी मेले में बाबा श्याम के दर्शन करने के लिए आया था लेकिन अचानक से मेरा मोबाइल गिर गया। ढूंढने के बाद भी नहीं मिला। लेकिन खाटूश्यामजी थाने के कांस्टेबल विनोद कुमार ने खोया हुआ मोबाइल वापस देकर मेरे चेहरे पर खुशी लौटा दी।

नरेश निमावत स्मृति संस्थान ने बाबा श्याम के वार्षिक फाल्गुनी लक्खी मेले में निशुल्क सेवा शिविर लगाया

गरीबों का सितारा

खाटूश्यामजी, (विनोद धायल)। हारे के सहारे बाबा श्याम के वार्षिक फाल्गुनी लक्खी मेले में नरेश निमावत स्मृति संस्थान खाटूश्यामजी द्वारा श्याम शरण में आने वाले भक्तों, श्रद्धालुओं और यात्रियों के लिए सेवा शिविर शुरू किया गया है। गौरतलब है कि पारंपरिक रिवाज से ऊँट गाड़ियों के साथ सिर पर सिगड़ी लिए महिलाएँ और श्री श्याम के भजनामृत से आह्लादित नाचते-गाते श्रद्धालुओं का संघ सूरजगढ़ से निशान लेकर मण्ढ़ा मार्ग से खाटूधाम आता है। इस बार सूरजगढ़ का 375 वाँ दिव्य निशान बाबा श्याम के मंदिर के शिखरबंद पर चढ़ाया जाएगा जो अगले वार्षिक फाल्गुनी लक्खी मेले तक मंदिर के शिखरबंद पर लहराएगा। नरेश निमावत स्मृति संस्थान खाटूश्यामजी के प्रबंधक अशोक कुमार शर्मा निमावत ने बताया कि मण्ढ़ा मार्ग से आने वाले पदयात्रियों के लिए काशीदा बावड़ी से आगे स्वतंत्रता सेनानी रामेश्वर प्रसाद शर्मा निमावत कृषि फार्म में स्थित नरेश निमावत मार्केट में सेवा शिविर लगाया गया है। पलसाना के वेद नारायण वेद विद्यालय के वेदाचार्य राकेश शर्मा और वेदज्ञ पंडित धर्मेन्द्र शर्मा के सान्निध्य में वेदविद्यार्थियों द्वारा वैदिक मंगलाचरण से शुरू हुए सेवा शिविर में पदयात्रियों के लिए पेयजल, फलाहार, अल्पाहार और आवास इत्यादि की निशुल्क व्यवस्था की गई है। इस अवसर पर नरेश निमावत स्मृति संस्थान खाटूश्यामजी के प्रबंधक अशोक कुमार शर्मा निमावत, राष्ट्रपति से सम्मानित वरिष्ठ शिक्षक फूलाराम भादू , देवानन्द शर्मा, पवनसिंह चौहान, अशोक चौधरी, अंकित सैनी, रामगोपाल गुर्जर, मनीष कुमावत, संस्कार विद्यापीठ बाय व गोपाल विद्यालय दाँतला के विद्यार्थी, श्याम भक्तों सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

सावित्री विद्यापीठ सीनियर सेकेंडरी स्कूल बस्सी में हुआ फागोत्सव का भव्य आयोजन

गरीबों का सितारा

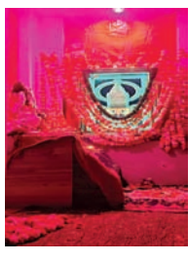

बस्सी (रामफूल मीणा)। शुक्रवार को बस्सी नगरपालिका क्षेत्र की सावित्री विद्यापीठ सेकेंडरी स्कूल में श्याम बाबा के दरबार में फागोत्सव का भव्य आयोजन किया गया और श्याम दरबार में श्याम बाबा की भव्य झांकी सजाई गई इस दौरान विधालय निदेशक रामधन शर्मा और प्रिंसिपल राजेन्द्र मीणा और व्यवस्थापक विकास शर्मा सहित विधालय का सम्पूर्ण स्टाफ मौजूद रहा।

ट्रांसपोर्ट नगर में जाट महाकुंभ के पोस्टर का हुआ विमोचन

गरीबों का सितारा

जयपुर, हरमाड़ा। टोडी स्थित न्यु ट्रांसपोर्ट नगर में रविवार 5 मार्च 2023 को विधाधर नगर स्टेडियम जयपुर में होने वाले जाट महाकुंभ को सफल बनाने को लेकर सामुहिक बैठक का हुआ आयोजन। इस दौरान जाट महासभा के पदाधिकारियों ने जाट महाकुंभ के पोस्टर का विमोचन किया। इस दौरान उप जिलाप्रमुख मोहन डागर ने सम्बोधित कर समाज के लोगों से ज्यादा से ज्यादा संख्या में पहुचने का आग्रह किया। इस अवसर पर जाट महासभा के अध्यक्ष राजाराम मील, समाजसेवी सुरेश चौधरी, उप जिलाप्रमुख जयपुर मोहन डागर, सरपंच दिनेश निठारवाल, सोहनलाल सेपट, सुरेश पुनिया, कुलदीप ढेवा, संतोष सारण, रचना मान, विश्वकर्मा ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन अध्यक्ष जगदीश चौधरी, रोहिताश शुरा अमर चौधरी सहित समाज के गणमान्य लोग मौजूद थे।

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की अनुदान मांगें ध्वनिमत से पारित, राजस्थान के सामाजिक सुरक्षा मॉडल की सर्वत्र सराहना: जूली

गरीबों का सितारा

युवराज शर्मा अलवर। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री टीकाराम जूली ने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश के प्रत्येक वर्ग एवं प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। इसके लिए राज्य सरकार द्वारा विभिन्न लोककल्याणकारी योजनाओं का संचालन किया जा रहा है। राजस्थान के सामाजिक सुरक्षा मॉडल की सर्वत्र सराहना हो रही है और यह दूसरे राज्यों के लिए भी अनुकरणीय है। जूली विधानसभा में मांग संख्या -31 (सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग) की अनुदान मांगों पर हुई बहस का जवाब दे रहे थे। चर्चा के बाद सदन ने सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की 79 अरब 16 करोड़ 13 लाख 4 हजार रुपए की अनुदान मांगें ध्वनिमत से पारित कर दीं। जूली ने कहा कि प्रदेश में न्यूनतम पेंशन एक हजार रुपए प्रतिमाह की गई है साथ ही, सामाजिक सुरक्षा पेंशन की राशि में प्रति वर्ष स्वतः ही 15 प्रतिशत की बढोतरी होगी। उन्होंने कहा कि गत 4 वर्ष में 35.50 लाख नए पेंशनर्स को विभिन्न पेंशन योजनाओं में जोड़ा गया है। लाभार्थियों को पेंशन प्राप्त करने के लिए कार्यालयों के चक्कर नही लगाने पड़ें, इसके लिए योजनाओं को जन-आधार से लिंक किया गया है। उन्होंने बताया कि अब महज 2 मिनट में पात्र आवेदकों की पेंशन स्वीकृत हो रही है। जीवित प्रमाण पत्र सत्यापन के लिए फेस रिकग्निशन एप की शुरूआत की गई है। इस सुविधा को लेकर लोगों में काफी उत्साह है और 16 दिन में ही 18 हजार लोगों ने अपना सत्यापन इस एप के माध्यम से करवाया है। जूली ने कहा कि सामाजिक सुरक्षा पेंशन की 96 प्रतिशत राशि राज्य सरकार द्वारा वहन की जा रही है। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री ने कहा कि पालनहार योजना के तहत देय सहायता राशि अब 500 रुपए से बढाकर 750 रुपए एवं 1000 रुपए से बढाकर 1500 रुपए कर दी गई है। योजना के अन्तर्गत 3.25 लाख नए बच्चों को जोड़ा गया है। उन्होंने कहा कि कोरोना के चलते अनाथ हुए बच्चों को वयस्क होने पर सरकारी नौकरी देने की घोषणा मुख्यमंत्री द्वारा की गई। वहीं, मुख्यमंत्री अनुप्रति कोचिंग योजना में लाभान्वित किए जाने वाले विद्यार्थियों की संख्या 15 हजार से बढाकर 30 हजार कर दी गई है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने विगत 4 साल में 59 छात्रावासों का निर्माण करवाया, जबकि आगामी वर्ष 30 छात्रावास बनाए जाएंगे। जूली ने मुख्यमंत्री कन्यादान योजना, वृद्ध कल्याण योजना, नवजीवन योजना, शक्ति सदन योजना एवं डॉ. सविता बेन अम्बेडकर अन्तजार्तीय विवाह योजना आदि का उल्लेख करते हुए कहा कि राज्य सरकार ने कोई ऐसा वर्ग नहीं छोड़ा जिसमें वंचित तबके को योजनाओं का लाभ नहीं मिल रहा हो। उन्होंने कहा कि डॉ. सविता बेन अम्बेडकर अन्तजार्तीय विवाह योजना के अन्तर्गत राज्य में अन्तजार्तीय विवाह करने पर सहायता राशि 5 लाख से बढाकर 10 लाख रुपए कर दी गई है। सिलिकोसिस पीड़ितों को विभिन्न योजनाओं के अ?तर्गत लाभान्वित कर राहत दी जा रही है। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी मिनिमम गारंटीड इनकम योजना ऐतिहासिक कदम है जिसके माध्यम से प्रदेश के सभी परिवारों को 125 दिवस प्रतिवर्ष रोजगार की गारंटी एवं वृद्ध/ दिव्यांग/ एकल महिला होने की स्थिति में न्यूनतम एक हजार रुपए महीने की पेंशन प्राप्त हो सकेगी। जूली ने बताया कि मुख्यमंत्री दिव्यांग स्कूटी योजना के अन्तर्गत आगामी वर्ष 5 हजार स्कूटियों का वितरण किया जाएगा। देश का दूसरा एवं प्रदेश का पहला बाबा आमटे दिव्यांग विश्वविद्यालय जयपुर में निमार्णाधीन है। वहीं, दिव्यांगजनों को प्रदेश में पदोन्नति में आरक्षण भी दिया गया है।

ब्यावर रेलवे स्टेशन का चीफ मैटेरियल मैनेजर ने किया निरीक्षण

अधिकारी के आगमन की सूचना पर रेलवे स्टेशन पर होने लगी साफ सफाई

यात्री जान जोखिम में डाल कर पटरी पार करते दिखे

गरीबों का सितारा

ब्यावर (अनिल सिखवाल) शहर जो राजस्थान में तिलपट्टी के नाम से अपनी पताका को लहराए हुए हैं उक्त शहर के मध्य में विद्यमान ब्यावर रेलवे स्टेशन का अद्भुत दृश्य देखने को मिला जानकारी के अनुसार शुक्रवार को भुवनेश माथुर (सी एम एम) चीफ मैटेरियल मैनेजर जयपुर से ब्यावर रेलवे स्टेशन पहुंचे उनके जैसे ही रेलवे स्टेशन के निरीक्षण की सूचना पहुंची तो देखते ही देखते हैं साफ सफाई का दौर शुरू हुआ खैर जो भी हो किसी अधिकारी के आगमन पर साफ सफाई होना बिल्कुल लाजमी है माथुर ने ब्यावर रेलवे स्टेशन का निरीक्षण करना शुरू किया साथ ही कुछ महत्वपूर्ण और आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए भी प्रतीत हुए लेकिन दूसरी ओर जैसे ही अरावली एक्सप्रेस का आगमन हुआ तो रेलवे यात्री नियमों को ताक में रखकर अपनी जान जोखिम में डालकर एक प्लेटफार्म से दूसरे प्लेटफार्म पर जाने के लिए रेलवे की पटरीयों को लांघकर पार करते हुए दिखाई दिए जोकि पूर्णतया नियमों की अनदेखी सा प्रतीत हुआ आखिर उनको कोई रोकने ठोकने वाला भी तो नहीं है लेकिन जब भी कोई घटना घटित होती है तब सभी को नियम याद आते हैं। साथ ही निरीक्षण अधिकारी मीडिया के प्रश्नों से भी दूर दिखाई दिए।

खाटू नरेश के रंग में रंगे दिखे डॉ रामप्रसाद भड़िया, शहर से मिला अपार स्नेह और सम्मान

गरीबों का सितारा

खाटूश्यामजी (विनोद धायल)। मानव सेतु फाउंडेशन के संस्थापक डॉ रामप्रसाद भड़िया का श्याम नगरी आगमन पर अनेक स्थानों पर उनका स्वागत सम्मान हुआ। आमजन, खासकर युवाओं में डॉ भड़िया के साथ फोटो और सेल्फी लेने का जुनून देखने लायक था। मानो पूरा शहर उनके स्वागत में पलक पावडे बिछा कर बैठा रहा। जैसे ही जिले की सीमा में प्रवेश किया, खाटू बाबा के आशीर्वाद से उनके स्वागत और सम्मान का सिलसिला शुरू हुआ, जो उनकी वापसी तक जारी रहा। खुद भड़िया ने भी खाटू नगरी को अपने बेहद नजदीक माना और कहा कि उन्हें सदैव यहां के लोगों का अपार स्नेह मिला है। उन्होंने बाबा श्याम के संगीत से जुड़े कार्यक्रमों में हिस्सा लिया तो युवाओं एवं अपने साथियों के साथ कार्यक्रम में शिरकत कि । साथ ही बाबा की नगरी के रंग में रंगे नजर आए और इस स्नेह एवं प्यार को अमूल्य थाती बताया। कुल मिलाकर श्याम नगरी मे आगमन के दौरान डॉ भड़िया ने शहर से जो दुलार पाया और युवा कार्यकताओं के साथ जो स्नेह सांझा किया वह अविस्मरणीय रहा। डॉ भड़िया ने वापस आगमन के दौरान पत्रकार बंधुओ से बातचीत मे श्री श्याम सेवा समिति ट्रस्ट के सभी सदस्यों व साथियों का इतने प्यार व सम्मान के लिए दिल की गहराइयों से आभार प्रकट किया ' श्री श्याम सेवक परिवार समिति के संरक्षक एवं अध्यक्ष ने बताया कि बाबा श्री श्याम के लखी मेले पर अष्ट दशम सेवकों उत्सव एवं भाग उत्सव मनाया एवं समिति के सदस्य संतोष सिंघानिया, कमल जैन उअ, सुनील गर्ग,मनीष गर्ग धीवाला एवं शानदार गायकार भी है, मेघश्याम गुप्ता, आशीष गोयल एवं ऋषभ एवं राहुल जैन इत्यादि लोगों ने बताया कि भागचंद जी का स्टेडियम में विशाल निशुल्क भंडारा लगभग 25000 लोगों के भोजन की व्यवस्था एवं विशाल निशुल्क विश्राम गृह डोम लगाकर रैन बसेरा को उतम व्यवस्था एवं दशमी के दिन रात को भजन

पूरी रात को मनीष गर्ग घि वाला, शुभम रुपम ,कोलकाता श्रीयुत राजू खण्डेलवाल मुंबई, मान्य- तान्या, गिनी कोर ,रेशमी समस्तीपुर, उमा भारती जयपुर इत्यादि द्वारा शानदार भजनों का रस द्वारा उत्सव मनाया, कार्यक्रम में मानव सेतु फाउंडेशन राजस्थान डॉ रामप्रसाद भड़िया के कई लोग आए सभी का स्वागत किया।

सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित, किताबों के साथ सड़क सुरक्षा का पाठ भी आवश्यक : डॉ. गुप्ता

गरीबों का सितारा

उमेश कुमार मोदी/बीकानेर। आरएलजी संस्थान द्वारा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रिडमलसर सिपाहीयान मे सड़क सुरक्षा विषय पर बच्चों के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गयो जिसमें संस्थान द्वारा पोस्टर व भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। संस्थान अध्यक्ष डॉ.अर्पिता गुप्ता ने कहा प्रतिदिन बढ़ रही सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के उद्देश्य से संस्थान द्वारा सड़क सुरक्षा अभियान की पहल की गई है जिसमें युवा पीढ़ी को यातायात संबंधी नियमों की जानकारी देने के साथ विभिन्न प्रतियोगिताओं द्वारा सड़क सुरक्षा का पाठ पढ़ाया जा रहा है` शाला प्रधानाचार्य साक्षी यादव ने सभी बच्चों को यातायात के नियमों का पालन करने को प्रेरित कियो इस अवसर पर बच्चों ने भाषण व पोस्टर द्वारा यातायात नियमों की जानकारी दी पोस्टर प्रतियोगिता में कोमल प्रथम व सिमरन द्वितीय स्थान पर रही व भाषण प्रतियोगिता में मयंक प्रथम नेमीचंद द्वितीय स्थान पर रहे संस्थान द्वारा विजेताओं व सभी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गयो शाला उप प्रधानाचार्य कमलेश ढाका ने सभी को सड़क सुरक्षा व यातायात के नियमों का पालन करने की शपथ दिलाई। कार्यक्रम में नीति शर्मा, मल्लिका सपरा, ओंकार सिंह भाटी, जयपाल कुकना, महेश किराडू की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

आवासन मंडल के बढ़ते कदम

जापानी तकनीक से सिटी पार्क में बनाए जाएंगे ऑक्सीजोन पॉकेट्स

मियावाकी तकनीक से 8 हजार स्क्वायर फीट जगह को दिया जा रहा घने जंगल का रूप

आवासन आयुक्त की मंशा : नैसर्गिक सौंदर्य के साथ विश्व स्तरीय हो सिटी पार्क का लुक

गरीबों का सितारा

जयपुर। आवासन आयुक्त पवन अरोड़ा की अनूठी सोच के चलते देश-दुनिया में खास पहचान बनाने वाले सिटी पार्क में अब जापानी तकनीक से ऑक्सीजोन पॉकेट्स बनाए जा रहे हैं। पार्क के एक पॉकेट की 8 हजार स्क्वायर फीट भूमि पर 35 प्रजातियों के करीब 3 हजार पेड़ लगाकर इसे घने जंगल का रूप दिया जा रहा है। राजस्थान आवासन मंडल के तत्वाधान में शुक्रवार को यंग इंडियन्स (वाईआई) संस्था के अध्यक्ष राहुल सिंघी, सह-अध्यक्ष गौरव बंसल, प्रोजेक्ट (प्लांटेशन) अध्यक्ष मोहित जाजू, विक्रम प्रताप सिंह (सह-अध्यक्ष) ने जापानी तकनीक से पौधे लगाकर अनूठे मिशन को आगे बढ़ाया। आवासन आयुक्त पवन अरोड़ा ने बताया कि सिटी पार्क अपनी नैसर्गिक खूबसूरती के चलते बहुत कम समय में ही देश दुनिया में लोकप्रिय हो गया है। पार्क को देखने के लिए हजारों की संख्या में आमजन और पर्यटक प्रतिदिन आ रहे हैं। पार्क को घना और नैसर्गिक लुक देने के लिए जापानी तकनीक मियावाकी की मदद ली जा रही है। अरोड़ा ने बताया कि 2 साल पहले रोटरी क्लब ने मियावाकी तकनीक पार्क के एक पॉकेट में 4 हजार स्क्वायर फीट जगह पर पौधे लगाए थे, जो अब बहुत घने हो गए। उन्होंने बताया कि इस तकनीक के जरिए सामान्य प्रजाति के पौधे दो-तीन वर्षों में ही घने होकर जंगल सा एहसास कराते हैं। जापानी तकनीक से वृक्षारोपण कार्यक्रम के दौरान अतिरिक्त मुख्य अभियंता संजय पूनिया, वरिष्ठ उद्यानविज्ञ डॉ. दिलीप शर्मा, उप आवासन आयुक्त जेपी बुगालिया, आवासीय अभियंता के-के दीक्षित सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी गण उपस्थित रहे।

गरीबों का सितारा में प्रकाशित खबर, लेख व विचार लेखकों एवं संवाददाताओं के अपने हैं इसमें संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है। सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र जयपुर होगा।

सेलिब्रेशन

होली हो और मौज-मस्ती ना हो, यह कैसे हो सकता है। **बालभूमि** को कुछ टीवी चाइल्ड आर्टिस्ट्स बता रहे हैं ये होली कैसे मनाते हैं? ये होली से जुड़े मजेदार किस्से भी शेयर कर रहे हैं। साथ ही होली पर तुम्हारे लिए इनके मैसेज भी।

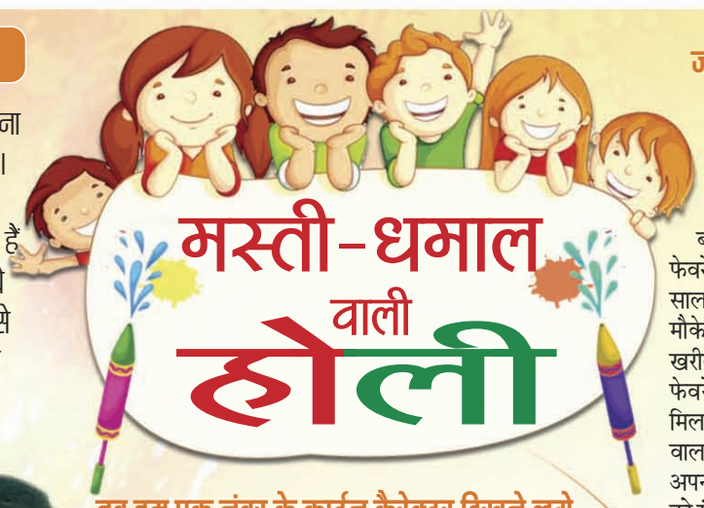

मस्ती-धमाल वाली होली

तब हम एक नंबर के कार्टून कैरेक्टर दिखने लगे
अद्विका शर्मा

अद्विका शर्मा आजकल एंडटीवी के सीरियल 'दूसरी मां' में आस्था के किरदार में दर्शकों को खूब भा रही है। वह होली पर खूब मस्ती करती है। अद्विका बताती है, 'होली से एक दिन पहले हम होलिका दहन में भाग लेते हैं। होली पूजन करते हैं। अगले दिन रंग खेलते हैं।' होली पर रंग लगवाने से जुड़ा एक मजेदार किस्सा अद्विका सुनाती है, 'बात पिछली होली की है। हम सब कजिंस होली में एक-दूसरे को जमकर रंग लगा रहे थे। हमारे सारे कलर्स जल्दी खत्म हो गए। तब हमने अपने चाचू के कलर्स से होली खेलने का प्लान बनाया। हमारे हर्बल कलर थे। हमें लगा कि चाचू के कलर्स भी हर्बल होंगे। हमने चुपके से चाचू के कलर्स लिए और फुल मस्ती में होली खेली। जब हम सब रंग खेलने के बाद नहाने लगे तो चेहरे से रंग छूटने का नाम ही नहीं ले रहे थे। दो दिन तक हमारे चेहर का रंग नहीं छूटा। हम सब एक नंबर के कार्टून कैरेक्टर लग रहे थे। पता चला कि चाचू के जिन रंगों को हमने यूज किया था, वो पक्के रंग थे। बालभूमि के दोस्तों को कहना चाहूंगी कि आप सब पक्के नहीं ऑर्गेनिक कलर्स या हर्बल कलर्स से होली खेलें। केमिकल या पक्के रंगों से हमारी स्किन को नुकसान पहुंचता है। हैप्पी होली टू ऑल! *

जब प्लान बनाकर पापा को चौंकाया
तृषा रोहतगी

जीटीवी के सीरियल 'कुमकुम भाग्य' में तृषा रोहतगी खुशी की भूमिका निभा रही है। इस बार वह होली कैसे सेलिब्रेट करेगी, पूछने पर चहकते हुए बताती है, 'होली मेरा फेवरेट फेस्टिवल है। मैं हर साल होली के त्यौहार के मौके पर नई पिचकारी खरीदती हूं। पानी में अपना फेवरेट पिंक कलर मिलाकर पिचकारी में रंग वाला पानी भरती हूं। फिर अपनी पिचकारी से सभी को रंग डालती हूं। इस साल मेरा होली का त्यौहार बहुत स्पेशल होगा, क्योंकि मैं 'कुमकुम भाग्य' की पूरी टीम के साथ भी होली खेलूंगी।' तृषा भी होली से जुड़ा किस्सा बताने से नहीं चूकती। वह हंसते हुए बताती है, 'यह किस्सा पिछले साल का है। पापा होली की सुबह सो रहे थे। मैंने मम्मी के साथ मिलकर एक प्लान बनाया। हम चुपके से पापा के बेड के पास गए और पापा की कलर से मूंछें बना दीं। जब पापा सोकर उठे और उन्होंने अपना चेहरा शीशे में देखा तो चौंके। पापा की ऐसी हालत देखकर, हम जोरों से हंसने लगे। पापा भी अपनी हंसी रोक नहीं पाए।' आखिर में तृषा रोहतगी बालभूमि के दोस्तों से कहती है, 'आप ऑर्गेनिक कलर का यूज करें। पानी की कम से कम बर्बादी करें। सेफली होली खेलें। सभी को हैप्पी होली!' *

हमने दूसरे ग्रुप के दोस्तों को घेर कर रंग डाला
अजिंक्य मिश्रा

इन दिनों अजिंक्य मिश्रा सोनी एंटरटेनमेंट चैनल के सीरियल 'कथा अनकही' में आरव की भूमिका में सबका दिख जीत रखा है। वह होली बहुत उत्साह से मनाता है। अजिंक्य बताता है, 'होली के दिन हमारा परिवार पहले पूजा करता है फिर हम रंग खेलते हैं। मेरे लिए इस बार की होली तीन वजहों से स्पेशल है। पहली वजह, सीरियल 'कथा अनकही' में मेरा किरदार आरव सबको खूब पसंद आ रहा है। दूसरी वजह, एग्जाम खत्म हो चुके हैं तो नो टेंशन। तीसरी वजह, घर पर इस बार दादाजी आए हैं, उनके साथ खूब मजे से होली खेलूंगा।' अजिंक्य होली से जुड़ा एक मजेदार किस्सा भी सुनाता है, 'पिछली होली की बात है। मेरी बिल्डिंग के एक विंग में रहने वाले दोस्तों ने दूसरे विंग में रहने वाले दोस्तों को रंग डालने का प्लान बनाया। प्लान के मुताबिक हमने कॉल करके दूसरे विंग के दोस्तों को एक जगह बुलाया। जैसे ही दूसरे विंग के दोस्त हमारी बताई जगह पर आए। हमने उन्हें घेर कर कलर वाले पानी से रंग दिया। बालभूमि के दोस्तों से कहना चाहूंगा कि जब किसी को भी रंग लगाएं तो ध्यान रखें कि रंग उसकी आंखों में ना जाए। आंखों में दिक्कत हो सकती है। सबको हैप्पी होली!' *

प्रस्तुतिः देवेंद्र पांडे

रोचक

बच्चों, दुनिया में बहुत सी ऐसी जगहें हैं, जब इन्हें हम देखते हैं तो लगता है जैसे इस जगह को किसी ने रंग दिया हो, जबकि इन्हें रंगने वाला कोई नहीं है, प्रकृति ने यह मनोहारी छटा बिखेरी है। इन रंग-बिरंगे स्थलों के बारे में तुम भी जानो।

रंग-बिरंगे स्थल प्रकृति की होली

हरे रंगों वाली सीढ़ियां मो कांग चोई, वियतनाम

बच्चों, जब पहली बार लोग दूर से इस जगह को देखते हैं तो यही लगता है, सीढ़ीनुमा पहाड़ी को किसी ने हरे रंग से रंग दिया है। थोड़ा पास आने पर लगता है, पहाड़ की सीढ़ियों पर हरी घास उगी है, जबकि सीढ़ियों पर हरी घास नहीं, चावल की फसल होती है। इस अनोखी जगह का नाम है- मो कांग चोई, जो वियतनाम के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में येन बाकी प्रांत का एक जिला है। यहां चावल के खेत पूरे विश्व में प्रसिद्ध हैं। बच्चों, इस अनोखी खेती के मोहक दृश्यों को देखने जगह-जगह से सैलानी आते हैं। *

पीले रंगों से रंगे पहाड़ लुओपिंग काउंटी, चीन

बच्चों, जब तुम एक बारगी इस स्थल को देखोगे तो तुम्हें लगेगा कि भूरे रंग के पहाड़ों के बीच की जगह को पीले रंग से रंगा गया है, लेकिन ऐसा नहीं है। यह लुओपिंग काउंटी नामक एक जगह है, जो पड़ोसी देश चीन के पूर्वी युन्नान प्रांत में कुजिंग सिटी नाम की जगह पर स्थित है। यहां बड़े पैमाने पर कैनोला की खेती होती है। कैनोला एक तरह का पौधा होता है, जिसमें पीले रंग के फूल खिलते हैं। खेतों में अनगिनत पीले रंग के फूल खिलने पर ऐसा लगता है, जैसे पहाड़ों के आस-पास किसी ने पीले रंग से रंग दिया है। *

लाल रंग का समुद्र तट पैनजिन रेड बीच, चीन

बच्चों, कोई समुद्र तट तुम्हें लाल दिखाई दे तो तुम चौंकोगे ही, क्योंकि वास्तविक रूप में या टीवी, किताबों में समुद्र तट नीले रंग के ही दिखाई देते हैं। लेकिन यह सच है कि लाल रंग का भी समुद्र तट है, इसका नाम है-पैनजिन रेड बीच। यह अनोखी जगह भी पड़ोसी देश चीन में स्थित है। समुद्र तट का रंग लाल असल में सुएदा नामक समुद्री पौधे की वजह से होता है। सितंबर से नवंबर के महीनों में इस पौधे का रंग हरे से लाल में बदल जाता है। तब पूरा पैनजिन रेड बीच लाल रंग में बदल जाता है। *

गुलाबी रंगों वाली धरती फूजी शिबाजाकुरा महोत्सव, जापान

बच्चों, जब तुम इस जगह को देखोगे तो ऐसी लगेगा जैसे यहां की धरती गुलाबी रंग की है। असल में यह एक पार्क है, जहां गुलाबी रंग के असंख्य फूल खिलते हैं। इस पार्क का नाम है-हिगाशिमोकोतो शिबाजाकुरा। जापान के इस पार्क में हर साल फूजी शिबाजाकुरा (फ्लावर्स फेस्टिवल) फेस्टिवल का आयोजन किया जाता है, जिसमें शिबाजाकुरा के फूल खिलते हैं। यहां पांच किस्मों के शिबाजाकुरा के लगभग आठ लाख पौधों पर फूल खिलते हैं। ऐसा लगता है मानो हरे रंग के पहाड़ गुलाबी रंग में बदल गए हों। *

प्रस्तुतिः बालभूमि फीचर्स

जीके क्विज-43

1. देश में उत्तर भारत का पहला परमाणु संयंत्र कहां बनेगा?
2. हाल में 24वां नॉर्डविस्ट कप 2023 जीतकर देश का 80वां ग्रैंडमास्टर कौन बना है?
3. पश्चिम बंगाल राज्य में होली किस नाम से मनाई जाती है?
4. डॉ. महेंद्र मिश्रा को किस अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है?
5. विश्व वन्यजीव दिवस कब मनाया जाता है?
6. महाराष्ट्र में होली को किस नाम से मनाते हैं?
7. होली के अगले दिन पंजाब में कौन-सा पर्व मनाते हैं?
8. होली को शिगमो के नाम से किस राज्य में मनाया जाता है?
9. प्रसिद्ध 'लठमार होली' कहां खेली जाती है?
10. बरसात के मौसम में बनने वाले प्राकृतिक इंद्रधनुष में कितने रंग होते हैं?

बच्चों, जीके क्विज-43 का उत्तर बालभूमि के अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा। सही जवाब देने वाले बच्चों के नाम भी प्रकाशित किए जाएंगे। तुम अपने जवाब हमें **balbhoomihb@gmail.com** पर मेल कर सकते हो।

जीके क्विज-42 का उत्तर : 1-भौतिक विज्ञान, 2-गंगा विलास, 3-दीप्ति शर्मा, 4-हाइड्रोजन, 5-शुक्र, 6-पास्कल, 7-ग्रेफाइट, 8-वाष्पीकरण, 9-यकृत(लीवर), 10-कार्बन डाइऑक्साइड

जीके क्विज-42 का सही उत्तर देने वाले: ऐश्वर्या-रोहतक, अश्विन-विराट, प्रिया-दिल्ली, रिंकी-धमतरी, नीरज-कटनी, विकास-जांजगीर, जितेंद्र-सोनीपत, चित्रा-कांकेर, मुकेश-महासमुंद, तुषार-रायगढ़, चंचल-महेंद्रगढ़, प्रिया-भिवानी

हंसगुल्ले

रिंकी- टिकी, क्या तुम बिना खाना खाए जिंदा रह सकती हो?
टिंकी-नहीं।
रिंकी- लेकिन मैं रह सकती हूं।
टिंकी- कैसे?
रिंकी (हंसते हुए)- दिन में चार-पांच बार नाश्ता करके।

-रुचि, भोपाल

भोलू- राजू, एक बात मुझे कल रात से समझ नहीं आ रही है।
राजू- कौन सी बात?
भोलू-यही कि 'अक्कड़-बक्कड़ बंबे बो 80, 90 पूरे 100' क्यों कहते हैं? जबकि 80, 90 को जोड़ने पर 100 नहीं 170 होते हैं।

-सुरेश, जबलपुर

मिंकी-चिंकी, जब पानी जमकर बर्फ बन जाती है तो उसमें क्या परिवर्तन होता है?
चिंकी- यही कि फिर पानी को पीने के बजाय उसे हम खा सकते हैं।

-रोशनी, रोहतक

कहानी / हरीश कुमार 'अमित'

हर साल होली पर स्तुति अपनी सहेली प्रिया के साथ खूब मस्ती करती थी। लेकिन इस साल वह होली पर स्तुति के साथ नहीं थी। प्रिया अपने पापा का तबादला होने के कारण बहुत दूर मुंबई चली गई थी। स्तुति को होली पर प्रिया की बहुत याद आ रही थी। वह उदास थी। लेकिन तभी ऐसा कुछ हुआ कि स्तुति का चेहरा खुशी से खिल उठा। क्या होली के दिन उसे एक नई सहेली मिल गई?

होली की खुशियां

आज होली का दिन है। हर ओर होली के त्यौहार का उत्साह छाया है। सुबह के नौ बज चुके थे, लेकिन स्तुति ने अभी तक बिस्तर नहीं छोड़ा था। मम्मी-पापा सुबह से कई बार उसे उठ जाने के लिए कह चुके थे, लेकिन वह अनमनी-सी बिस्तर में ही लेटी हुई थी।

स्तुति को अच्छी तरह पता था कि आज होली है, लेकिन होली खेलने का कोई उत्साह उसके मन में नहीं था। इससे पहले तो होली वाले दिन का उसे बड़ी बेसब्री से इंतजार रहा करता था। होली वाले दिन वह अपनी सबसे पक्की सहेली प्रिया के साथ बड़े उत्साह-उमंग से जी भरके होली खेला करती थी, खूब मस्ती किया करती थी। प्रिया के साथ मिलकर दूसरे लोगों को रंगों से सराबोर कर देने की योजनाएं वह होली आने से कई दिन पहले ही बनाने लगती थी। प्रिया उसके पड़ोस में ही रहती थी। वे दोनों एक ही स्कूल में पढ़ती थीं। उन दोनों की क्लास और सेक्शन भी एक ही था। लेकिन अब प्रिया इस शहर में थी ही नहीं। वह सैंकड़ों किलोमीटर दूर मुंबई चली गई थी, जहां कुछ महीने पहले उसके पापा का तबादला हो गया था।

बिस्तर में लेटे-लेटे स्तुति प्रिया के बारे में ही सोच रही थी। पिछले कई वर्षों से होली का त्यौहार उसने प्रिया के साथ ही मनाया था। प्रिया के साथ की गई होली की मस्ती उसे याद आने लगी। फिर यह सोचकर उसके मन पर उदासी छाने लगी कि प्रिया अब यहां नहीं है। तभी उसके कानों में मम्मी की आवाज पड़ी, 'स्तुति बेटा, अब उठ जाओ। देखो तो कौन आया है?'

स्तुति ने धीरे से आंखें खोलकर देखा तो पाया कि मम्मी के साथ एक बच्ची खड़ी है। बच्ची की उम्र स्तुति की उम्र जितनी ही थी।

तभी मम्मी बोलीं, 'स्तुति, यह मेघा है। ये लोग ग्वालियर से आए हैं, हमारे नए पड़ोसी हैं। मेघा भी तुम्हारी तरह फोर्थ क्लास में पढ़ती है। इसका दाखिला भी तुम्हारे वाले स्कूल में होना है। इसके पापा स्कूल प्रिंसिपल से बात कर आए हैं। यह तुम्हारे साथ होली खेलने आई है।'

मम्मी के मुंह से यह सब सुनकर स्तुति थोड़ी देर तक मेघा को देखती रही फिर बिस्तर से उतरकर खड़ी हो गई। मेघा उसे बड़ी अपनी-सी लग रही थी। फिर स्तुति और मेघा आपस में बातें करने लगीं तो मम्मी उस कमरे से बाहर चली गईं।

कुछ ही देर में स्तुति और मेघा आपस में खूब घुल-मिल गईं। स्तुति को लगने लगा जैसे वह मेघा को बहुत सालों से जानती है और प्रिया ही मेघा बनकर वापस आ गई है। उसकी उदासी न जाने कहां उड़न छू हो गई। होली खेलने का उत्साह उसमें लौट आया था। थोड़ी देर बाद ही स्तुति और मेघा जमकर होली खेल रही थीं, बिल्कुल वैसे ही जैसे स्तुति और प्रिया खेला करती थीं। उन दोनों को होली खेलते देखकर स्तुति के मम्मी-पापा भी बहुत खुश हो रहे थे।

तभी मेघा के मम्मी-पापा भी रंग-गुलाल लेकर वहां आ गए और स्तुति के मम्मी-पापा के साथ होली खेलने लगे। सारा वातावरण होली की खुशियों से भर गया था। *

कविता

डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

होली में

खुशियों की बदली है छाई, होली में,
खूब बधाई! खूब बधाई! होली में।
दादा-दादी, पापा-मम्मी, चाचा जी,
झूम रहे हैं ताऊ-ताई, होली में।
गुझिया, पापड़, चिप्स, मिठाई, मेवे, फल,
और पापड़ी भी घर आई, होली में।
दही-बड़े तो खाते ही हैं होली पर,
चंद्रकला क्या तुमने खाई, होली में?
रंग-गुलाल-अबीर हर तरफ, क्या कहने!
पिचकारी ने धूम मचाई, होली में।
मैंने इतना रंग खेला, क्या बतलाऊं?
मम्मी ही पहचान न पाईं, होली में।

रंग भरो-120

रंग भरो-120 में दिए गए चित्र को तुम लोगों ने बहुत अच्छे से रंगकर हमें भेजा। उनमें से चुना गया सबसे अच्छा चित्र हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं। उसे रंगकर भेजने वाले बच्चे के चित्र के साथ कुछ अन्य बच्चों के नाम और चित्र भी प्रकाशित कर रहे हैं।

पलक, धमतरी

आयुष, रायपुर

आरोही गौरेला,पेंड्रा-मरवाही

अनवी, बालाघाट

आराध्या, बिलासपुर

इनके भी चित्र रहे प्रशंसनीय

विवेक-बिलासपुर, अंकित-धमतरी, आयुष-रायपुर, अनुष्का-विदिशा, आरव-बिलासपुर, अभिनव-बिलासपुर, अंकित-रायपुर, निक्षिप्ता-पठानकोट, नीरज-भाखरा, रितिका-बिलासपुर, वैष्णवी-उमरिया, विवेक-बिलासपुर, महिमा-महेंद्रगढ़, निकिता-दिल्ली

लोकिता, बालोद

रंग भरो 121

बच्चों, यहां पर होली सेलिब्रेशन से जुड़ा एक चित्र दिया गया है, जिसमें कुछ बच्चे एक-दूसरे को रंग लगा रहे हैं। इस चित्र को मनचाहे प्यारे रंगों से रंगकर हमें भेजो। जिस बच्चे का चित्र सर्वश्रेष्ठ होगा, उसे हम **बालभूमि** में प्रकाशित करेंगे। चित्र के साथ अपनी फोटो, अपना और शहर का नाम हमें इस पते पर भेजो- संपादक-फीचर, हरिभूमि कार्यालय, 129, ट्रांसपोर्ट सेंटर, पंजाबी बाग, पश्चिमी दिल्ली, नई दिल्ली-110035 या ई-मेल आईडी balbhoomihb@gmail.com पर मेल करो।

रास्ता खोजो

बच्चों, गोलू को होली खेलने अपने दोस्त गप्पा के घर जाना है, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा है कि गप्पा के घर तक पहुंचने के लिए कौन-सा रास्ता सही रहेगा? तुम गोलू की गप्पा के घर तक पहुंचने में मदद तो करो।

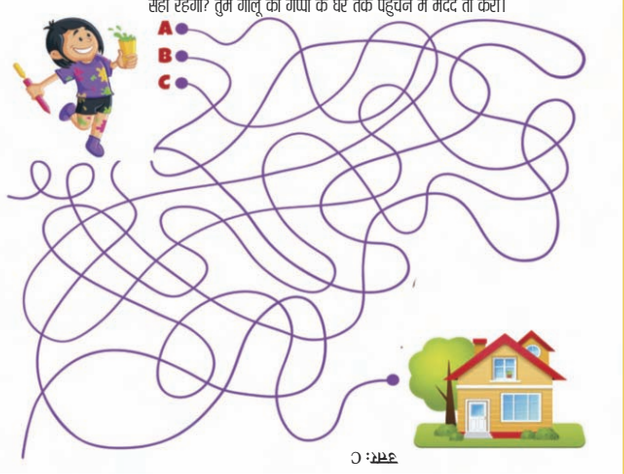

उत्तर: A

गरीबों का सितारा में प्रकाशित खबर, लेख व विचार लेखकों एवं संवाददाताओं के अपने हैं इसमें संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है। सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र जयपुर होगा।

खाटूश्यामजी मेला विशेष : 2023

लगे जयकारे : सबकी जुबाँ पर एक ही नाम 'जय श्री श्याम-जय श्री श्याम'

एकादशी पर अपने कुल देवता के दर्शन कर मनौतियां मांगी , नीले घोड़े पर सवार होकर आए बाबा श्याम

एकादशी पर उमड़ा श्याम भक्तों को सैलाब

गरीबों का सितारा

खाटूश्यामजी। (विनोद धायल/नरेश कुमावत)। श्रद्धा की बहती बयार, रंग गुलाल उडाता भक्तों का रैला, आसमान से होती पुष्प वर्षा और हीरे-मोतियों से जड़ी रंग-बिरंगी पोशाक, सिर पर केसरिया पगड़ी पहनकर बाबा श्याम रथ पर सवार होकर जब खाटू की गलियों से गुजरे तो हर एक श्याम भक्त पलक पांवडे बिछाए हुए उनके स्वागत में तैयार खडे रहे। एकादशी को खाटू नगरी के भ्रमण के लिए श्याम मंदिर से सुबह सवा ग्यारह बजे रथ पर सवार बाबा श्याम की शोभायात्रा गाजे–बाजे के साथ निकाली गई। शोभायात्रा के आगे सैकडों श्याम भक्त रंग गुलाल उडाते नाचते हुए चल रहे थे। पूरा खाटूधाम बाबा श्याम के जयकारों से गुंजायमान हो रहा था। रथ यात्रा के दौरान श्याम भक्तों की भारी भीड उमड पड़ी। भीड़ इतनी थी कि खाटू की गलियां भी छोटी नजर आने लगी। इस दौरान भीड को नियंत्रित करने के लिए पुलिस व स्वयंसेवकों के पसीने छूट रहे थे। शोभायात्रा श्याम मंदिर से श्याम कुण्ड, अस्पताल चौराहा, होटल श्याम, पुराना बस स्टेण्ड होते हुए कबुतरिया चौक पहुंची। मीरा की करुणा.. सूर का समर्पण...चैतन्य की तन्मयता.. तुलसी की भक्ति और द्रोपदी की पुकार.. क्या नहीं है इस दृश्य में.. घर व सारे वैभव भूलकर श्याम भक्त बरामदों व चौबारों में रात गुजार रहे हैं। पैदल, पेट पलायन, दंडवत तो कोई घुटनों के बल मीलों की यात्रा करके आया है। लेकिन, ना कोई पीड़ा है ना ही चेहरे पर कोई शिकन। भूख- प्यास की भी चिंता नहीं है। बस भावों से भरे हृदय में नाम एक है, लक्ष्य एक है, भरोसा एक है, आशा व उम्मीद एक है..बाबा श्याम। जिनकी एक झलक की ललक लिए सैंकड़ों श्रद्धालु पूरी रात यूं ही खुले आसमान में गुजार रहे हैं। श्याम नाम का जप व स्मरण तो कोई भजन-कीर्तन से श्याम दर्शनों के बीच आई रात को भक्ति भाव से रोशन कर रहा है। तन थकान से चूर है, लेकिन मन में नई नई उमंग उठती है। ज्यों- ज्यों रात ढलती हैं, श्याम मिलन की आस में उत्साह त्यों- त्यों बढ़ता जाता है। बाबा के पट खुलने पर तो आस्था हृदय के रास्ते रोम- रोम तक पहुंचकर पूरे तन को रोमांच से भर देती है। भावों से मन इतना भाव विभोर हो जाता है कि कई प्रेमी भक्तों की आंखें ही निर्झर हो जाती है।

झलक पाते ही निकले आंसू

श्याम का दीदार, श्रद्धालु लाखों पार

खाटूश्यामजी मेले का मुख्य मेला एकादशी पर शुक्रवार को आयोजित हुआ। जिसमें बाबा श्याम के दर्शनों के लिए लाखों भक्त पहुंचे । श्याम सरकार के दर्शनों के लिए एकादशी रात तक हजारों श्रद्धालु पंजीयन करवा चुके थे। देर रात के पंजीयन व स्थानीय लोगों को शामिल करने पर श्रद्धालुओं की संख्या लाखों से ज्यादा रही।

नीले घोड़े पर सवार होकर आए बाबा श्याम

श्याम एकादशी पर श्याम बाबा की शोभायात्रा सफेद घोड़ों के रथ पर निकाली गई। जिसमें बाबा श्याम नीले घोड़े पर सवार होकर अपने भक्तों को दर्शन दिए। बाबा श्याम की शाही सवारी प्रातः 11 बजे मंदिर परिसर से रवाना होकर श्याम कुंड, शनि मंदिर, जांगिड़ मोहल्ला, अस्पताल चौराहा, पुराना बस स्टेंड होते हुए शोभायात्रा कबुतरियां चौक पर पहुंची।

फोटो : नरेश कुमावत

भगवान को लगाया गया छप्पन भोग

एकादशी पर बाबा श्याम को छप्पन भोग लगाया गया। श्री श्याम मंदिर कमेटी के मंत्री प्रताप सिंह चौहान ने बताया कि एकादशी के दिन बाबा श्याम के विशेष श्रृंगार के साथ 56 मिष्ठानों का भोग लगाया गया। 56 भोग तैयार करने के लिए कारीगर राजस्थान से बाहर से बुलाए गए है। कारीगर बाबा के छप्पन भोग के लिए पिछले तीन दिन से तैयारी में जुटे थे।

पांडाल सजे धर्म शालाएं रही बुक

श्याम बाबा के वार्षिक लक्खी मेले में सभी धर्मशालाओं व पांडालों मे बाबा श्याम का अलौकिक दरबार सजाकर भजन संध्याओं का आयोजन किया गया जिसमें अनेक श्याम भजन गायकों ने बाबा श्याम को भजनों से रिझाया तो वहीं श्याम भक्त भजनों की स्वर लहरियों पर थिरकते नजर आये।

सूरजगढ़ का निशान आज चढ़ेगा

परम्परा के अनुसार सूरजगढ का प्राचीन निशान द्वादशी शनिवार को चढेगा। वर्ष प्रयन्त शिखरबंद पर चढ़े रहने वाला निशान जत्थे के साथ चढ़ाया जायेगा।

श्याम दर्शन के बाद मिली दौगुनी खुशी

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक प्रमोद कुमार शर्मा के लिए पूजा प्रिंटर्स सी-4, सुदर्शनपुरा, इंडस्ट्रीज एरिया, जयपुर से मुद्रित एवं 23, गोपी नगर, नियर कुकरखेड़ा मंडी गेट शरद कांटा गली, मुरलीपुरा, जयपुर से प्रकाशित किया जाता है। संपादक प्रमोद कुमार शर्मा। पत्रों में लेखकों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों से संपादक एवं प्रकाशक की सहमति अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र जयपुर होगा। संपादक : प्रमोद कुमार शर्मा, मों. 8504812999 ई-मेल : Viksa.pramod999@gmail.com